शोध, साहित्य एवं संस्कृति की
मासिक पत्रिका

जनवरी 2022
अंक 1

www.nayi goonj. Com

नई गूँज

Email - goonjnayi@gmail.com

whatsapp no.91-9785837924

NAYI GOONJ – SHODH , SAHITYA EVAM SANSKRITI (MONTHLY) MAGAZINE

शोध , साहित्य और संस्कृति की मासिक वैब पत्रिका

नयी गूंज--------.

वर्ष 2022

अंक 1

WEBSITE- nayigoonj.com
Email address goonjnayi@gmail.com -
WHATSAPP NO. 91-9785837924

संपादक मंडल

प्रमुख संरक्षक

प्रो. देव माथुर

vishvavishvaaynamah.webs1008@gmail.com

मुख्य संपादक

रीमा माहेश्वरी

shuddhi108.webs@gmail.com

संपादक

शिवा 'स्वयं'

sarvavidhyamagazines@gmail.com

शाखा प्रमुख

ब्रजेश कुमार

aryabrijeshsahu24@gmail.com

परामर्शदाता

कमल जयंथ

jayanth1kamalnaath@gmail.com

संपादकीय

शिवा 'स्वयं'

अपनी जन्मभूमि को नमन करने,

हम शब्दों की भेंट लाये हैं !

पिरो दिया है स्याही में अंतर्मन की ज्वाला को,

हम पावन अपनी धरती माँ का

वंदन करने आये हैं

अपने आप को पाने के लिए ही तो सारी जद्दोजहद है ! जीवन का सदुपयोग हो सके, हम वो बन सके जैसा बन कर लगे कि हाँ, अब अंदर सुकून है ! पर ऐसा तो कुछ भी करके होता नहीं ! मृग तृष्णा है भीतर, बस केवल बढ़ती ही जाती है !

मिट्टी से अब खुश्बू आती नहीं है, घरों में मार्बल सजा कर उसमें से खुश्बू अनुभव करने की कोशिश कर रहे हैं हम सब !

ऐसा भी कहीं होता है ?

क्योंकि हम वस्तुओ से खुद को भर कर, वास्तव में खाली कर रहे हैं ! भरना है तो विचारों को भरो, जो हमें एक दिन पूरा तो करेंगे ! नहीं तो संभवतः हमारी पूंजी में हीरे मोती नहीं कंकड़ पत्थर ही रह जायेंगे !

एक पवित्र प्रेरणा का हाथ पकड़ कर चलो जो इस तरह साथ होती है जैसे माँ की ऊँगली थाम कर चलना, वो जो हमेशा कोमल रास्तो पर चलना नहीं सिखाती, वो तो उबड़ खाबड़ रास्तों का निर्माण खुद ही करती है कि उसके बच्चे को उन रास्तों पर

चलना आ जाये ! वो सिखाती है कि हज़ार बार भी गिरो तो कोई बात नहीं मगर हौसला एक बार भी गिरने मत देना !

वो भरोसा सिखाती है,

अवगुणों से भरे हम, यदि जीवन में गुण जोड़ लें तो यह चिरस्थाई संपत्ति होगी, जिससे सच्चा श्रृंगार सम्भव हो जाता है !

हम बहुत मेहनत से कमाते हैँ, अपने जीवन कों सजाते हैँ अच्छे कपड़ो से, बड़ी गाड़ी से, महंगे समानों औऱ आलीशान घरों से ! कमाई एक तो बाहर के लिए होती है जो जीवन का बाहरी रंग सुन्दर कर देती है लेकिन इस बाहर कों सजाने की दौड़ में अंदर से सुंदरता तो दूर की बात है अंदर की तो गन्दगी तक साफ नहीं हो पाती –

किसी गायक की कही पंक्तियाँ हैँ कि -

क्यों पानी में मल मल नहाये
मन की मैल उतार ओ प्राणी..

दिन रात परिश्रम करके हम चमकने वाली चीज़े तो खरीद लेते हैँ लेकिन व्यक्तित्व के रंग को तो काला ही कर देते हैँ - घृणा, प्रतिस्पर्धा, जलन, लोभ इतने विकार भर जाते हैँ हम में औऱ हम उनको अपने अंदर की कुरूपता नहीं मानते बल्कि हम इन विकारों के साथ जीने के इतने आदि हो जाते हैँ कि व्यक्तित्व में इन सब बातों को हम सहज़ मानने लगते हैँ !

समझना तो इस बात को पड़ेगा कि जिस तरह ऊपर से चमकने के लिए कुछ देर के लिए मेकअप किया जा सकता है लेकिन स्थाई चमक के लिए अच्छा स्वास्थ्य चाहिए उसी तरह अपने भीतर स्वस्थ विचारों को रख कर ही हम स्वयं अपने

विस्तार को पा सकते हैँ, अन्यथा नहीं !'इसी उद्देश्य की प्राप्ति की ओर यह पहला कदम....

शुभेच्छा

नयी गूंज------. परिवार

परामर्शदाता-

प्रश्न है कि संस्कृति क्या है। यूं संस्कृति शब्द सम्+कृति से बना है, जिसका अर्थ है अच्छी कृति। अर्थात् संस्कृति वस्तुतः राष्ट्रीय अस्मिता के परिचायक उदात्त तत्वों का नाम है।

भारतीय सन्दर्भ में संस्कृति व्यक्तिनिष्ठ न होकर समष्टिनिष्ठ होती है। संस्कृति की संरचना एक दिन में न होकर शताब्दियों की साधना का सुपरिणाम होता है। अतः संस्कृति सामासिक-सामाजिक निधि होती है। संस्कृति वैचारिक, मानसिक व भावनात्मक उपलब्धियों का समुच्चय होती है। इसमें धर्म, दर्शन, कला, संगीत आदि का समावेश होता है। इसी की अपरिहार्यता की ओर संकेत करते हुए भर्तृहरि ने लिखा है कि इसके बिना मनुष्य घास न खाने वाला पशु ही होता है-

"साहित्यसंगीतकला-विहीनः

साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः।।

मुख्य संपादक

उपनिषद् के शब्दों में कहें तो संस्कृति में जीवन के दो आयाम श्रेय व प्रेय का सामंजस्य होता है। इन्हीं आधार पर आध्यात्मिक, वैचारिक व मानसिक विकास होता है और इन्हीं के आधार पर जीवन-मूल्यों व संस्कारों का निर्धारण होता है और यही जीवन के समग्र उत्थान के सूचक होते हैं। शिक्षा-तंत्र में इन्हीं सांस्कृतिक मूल्यों का शिक्षण-प्रशिक्षण होता है। वर्तमान में शिक्षा-व्यवस्था संस्कृति की अपेक्षा सम्यता-निष्ठ अधिक है। तात्पर्य है कि वर्तमान शिक्षा विचार-प्रधान, चिन्तन-प्रधान व मूल्यप्रधान की अपेक्षा ज्ञानार्जन-प्रधान है। वस्तुतः इसी का परिणाम है कि सम्प्रति शिक्षा के द्वारा बौद्धिक स्तर में तो अभिवृद्धि हुई है किन्तु संवेदनात्मक या भावनात्मक स्तर घटा है।

WEBSITE- nayigoonj.com
Email address goonjnayi@gmail.com -
WHATSAPP NO. 91-9785837924

संपादक -

हमारी शिक्षा में सांस्कृतिक मूल्यों के स्थान पर पश्चिमी सभ्यता-मूलक तत्वों को उपादान के रूप में ग्रहण कर लिया गया है। तभी तो शिक्षा व समृद्धि के पाश्चात्य मानदण्डों को आधार मान लिया है जो संस्कृति-विरोधी हैं, जिनमें नैतिक व मानवीय मूल्यों का विशेष स्थान नहीं है। इसी का परिणाम है कि बुद्धिमान व गरीब नैतिक व्यक्ति सामाजिक दृष्टि से भी हांसिये पर ही रहता है और नैतिकता-विहीन, संवेदनहीन, भ्रष्टाचारी व अपराधी भी सम्पन्न, सभ्य, सम्मान्य व प्रतिष्ठित होता है। इसी संस्कृति-विहीन व्यवस्था के कारण शोषण-प्रधान पूंजीवादी व्यवस्था ही ग्राह्य हो गई है, जिसने रहन-सहन के स्तर को तो उठाया है, पर इस भोगवादी बाजारवादी व्यवस्था के कारण अर्थशास्त्र व तकनीकिविज्ञान के सामने नैतिकता व मानवीयता गौण हो गई है। जबकि राधाकृष्णन व कोठारी आयोग की मान्यता थी कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जो सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक परिवर्तन का प्रभावी माध्यम बन सके। इस दृष्टि से भारतीय प्रकृति और संस्कृति के अनुरूप शिक्षा से ही मूल्यपरक उदात्त-गुणों का संप्रेषण और समग्र व्यक्तित्व का निर्माण सम्भव है। इसमें पुराने व नये का बिना विचार किये जो देश की अस्मिता व समाज के हितकर है, उसी को प्रमुखता देनी चाहिए।

शाखा प्रमुख की कलम से--

प्रिय पाठकों

संस्थान की पत्रिका नयी गूंज के पहले अंक का लोकार्पण एक आंतरिक सुख की अनुभूति करा रहा है।

मुझे प्रसन्नता है कि शाखा प्रमुख *के रूप में कार्यभार संभालने के बाद मुझे आप सभी से नयी गूंज के इस अंक के माध्यम से रूबरू होने का मौका मिल रहा है।*

हम कितना भी विकास कर लें किन्तु यदि समाज में संवेदना ही मर गई तो सब व्यर्थ है। इस संवेदनहीनता के चलते समाज में नकारात्मक ऊर्जा दिन प्रति-दिन बढ़ती जा रही है जो निन्दनीय भी है और विचारणीय भी। आवश्यकता है कि हम अविलम्ब इस दिशा में अपने प्रयास आरम्भ कर दें।

वस्तुतः अपने कर्मों से हम अपने भाग्य को बनाते और बिगाड़ते हैं। यदि गंभीरता से चिंतन-मनन किया जाय तो हमारा कार्य-व्यापार हमारे व्यक्तित्व के अनुसार ही आकार ग्रहण करता है और हमें अपने कर्म के आधार पर ही उसका फल प्राप्त होता है। कर्म सिर्फ शरीर की क्रियाओं से ही संपन्न नहीं होता अपितु मनुष्य के विचारों से एवं भावनाओं से भी कर्म संपन्न होता है। वस्तुतः जीवन-भरण के लिए ही किया गया कर्म ही

कर्म नहीं है हम जो आचार-व्यवहार अपने माता-पिता बंधु मित्र और रिश्तेदार के साथ करते हैं वह भी कर्म की श्रेणी में आता है। मसलन हम अपने वातावरण सामाजिक व्यवस्था, पारिवारिक

समीकरणों आदि के प्रति जितना ही संवेदनशील होंगे हमारा व्यक्तित्व उतनी ही उच्चकोटि की श्रेणी में आयेगा।

आज के जटिल और अति संचारी जीवन-वृत्ति के सफल संचालन हेतु सभी का व्यक्तित्व उच्च आदर्शों पर आधारित हो ऐसी मेरी अभिलाषा है।

यह ज़रूरी नहीं है कि हर कोई हर किसी कार्य मे परिपूर्ण हो, परन्तु अपना दायित्व अपनी पूरी कोशिश से निभाना भी देश की सेवा करने के समान ही है। संपूर्ण कर्तव्यनिष्ठा से किया हुआ कार्य आपको अवश्य ही कार्य-समाप्ति की संतुष्टि देगा। कोई भी किया गया कार्य हमारी छाप उस पर अवश्य छोड़ देता है अतएव सदैव अपनी श्रेष्ठतम प्रतिभा से कार्य संपन्न करें। हर छोटी चर्या को और छोटे-से-छोटे से कार्य के हर अंग का आनंद लेकर बढ़ते रहना ही एक अच्छे व्यक्तित्व का उदाहरण है।

यह सर्वविदित तथ्य है कि नयी गूंज एक उच्च स्तरीय पत्रिका है जिसमें विभिन्न विधाओं में उच्चस्तरीय लेखों का अनूठा संग्रह है

आप सभी पत्रिका का आनन्द लें एवं अपनी प्रतिक्रियायें ऑनलाइन या ऑफलाइन भेजें।

नयी गूंज के माध्यम से हमारा आपका संवाद गतिशील रहेगा। आप सभी अपनी सुन्दर व श्रेष्ठ रचनाओं से नयी गूंज को निरन्तर समृद्ध करते रहेंगे इसी विश्वास के साथ।

अंत में मैं सभी सम्पादक मण्डल के सदस्यों एवं रचनाकारों को नयी गूंज पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन के लिए साधुवाद ज्ञापित करता हूं करता हूँ।

आप सभी को हार्दिक बधाई के साथ बहुत-बहुत धन्यवाद!!

कालिदास ने काव्य के माध्यम से कहा है-

पुराणमित्येव न साधु सर्वं
न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।
सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते
मूढः परप्रत्ययनेय बुद्धिः।।

अर्थात् पुरानी ही सभी चीजें श्रेष्ठ नहीं होती और न नया सब निन्दनीय होता है। इसलिए बुद्धिमान व्यक्ति परीक्षा करके जो हितकर होता है उसी को ग्रहण करते हैं जबकि मूर्ख दूसरों का ही अन्धानुकरण करते हैं। अस्तु, निर्विवाद रूप से यह सभी स्वीकार करते हैं कि राष्ट्र की रक्षा, का सकारात्मक पक्ष होता है।

प्रकाशन सामग्री भेजने का पता

ई-मेलःgoonjnayi@gmail.com

नयी गूंज इंटरनेट पर उपलब्ध है। www.nayigoonj.com पर क्लिक करें।

नयी गूंज.में प्रकाशित लेखादि पर प्रकाशक का कॉपीराइट है

शुल्क दर 40/-

वार्षिक: 400/-

त्रैवार्षिक: उपर्युक्त शुल्क-दर का अग्रिम भुगतान 1200/-

को ----------द्वारा किया जाना श्रेयस्कर है।

नियम निर्देश

1 रचनाएं यथासंभव टाइप की हुई हों, रचनाकार का पूरा नाम, पद एवं संपर्क विवरण का उल्लेख अपेक्षित है।

2 लेखों में शामिल छाया-चित्र तथा आँकड़ों से संबंधित आरेख स्पष्ट होने चाहिए। प्रयुक्त भाषा सरल, स्पष्ट एवं सुवाच्य हिंदी भाषा हो।

3 अनुदित लेखों की प्रामाणिकता अवश्य सुनिश्चित करें। अनुवाद में सहायता हेतु संस्थान संपादक मंडल प्रकोष्ठ से संपर्क कर सकते हैं।

4 प्रकाशित रचनाओं में निहित विचारों के लिए संपादक मंडल प्रकोष्ठ उत्तरदायी नहीं होगा और इसके लिए पूरी की पूरी जिम्मेदारी स्वयं लेखक की ही होगी।

नई गूँज नियमावली

रचनाएं goonjnayi@gmail. Com ई-मेल पते पर भेजी जा सकती हैं। रचनाएं भेजने के लिए नई गूँज के साथ लॉग-इन करें, यह वांछित है।

आप हमारे whatsapp no. 9785837924 पर भी अपनी रचनाएँ भेज सकते हैं

प्रिय साथियों,

नई गूँज हेतु आपके सहयोग के लिए आपका हार्दिक धन्यवाद। आशा है कि ये संबंध आगे भी प्रगति के पथ पर अग्रसर रहेंगे। आगामी अंक हेतु आप सबके सक्रिय सहयोग की पुनः आकांक्षा है। आप सभी से एक महत्वपूर्ण अनुरोध है कि आप अपने शोध प्रपत्र निम्न प्रारूप के तहत ही प्रस्तुत करें जिससे कि हमें तकनीकी जटिलताओं का सामना न करना पड़े -

1.प्रकाशन हेतु आपकी रचना के मौलिक होने का स्वतः सत्यापन रचना प्रेषित करते समय "मौलिकता प्रमाण पत्र" पर हस्ताक्षर करना अनिवार्य है। इसके बिना रचना पर विचार करना संभव नहीं होगा

2. रचना कहीं पर भी पूर्व में प्रकाशित नहीं होनी चाहिए !

3. आपकी रचनाएँ एम.एस. ऑफिस में टाइप होना चाहिए

4. फोंट - कृतिदेव 10, मंगल यूनिकोड

5. रचनाओं के साथ अपना पूर्ण पता, मोबाइल नंबर, ईमेल तथा पासपोर्ट साइज की फोटो लगाना अपेक्षित है !

6. आप लेख, कविता, कहानी, किसी भी विधा में रचनाएँ भेज सकते हैं !

नई गूँज रचनाओं के प्रेषण सम्बंधित नियम व शर्तें :

- एक से अधिक रचनायें एक ही वर्ड-डॉक्यूमेंट में भेजें।
- रचनायें अपने पंजीकृत पेज पर दिए गए लिंक इस्तेमाल कर प्रेषित करें।
- यदि आप हिंदी में टाइप करना नहीं जानते हैं, आप गूगल द्वारा उपलब्ध करवायी गयी लिप्यान्तरण सेवा का इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके लिए Google इनपुट उपकरण लिंक पर जाएँ।

स-आभार

संपादक मंडल

WEBSITE- nayigoonj.com
Email address goonjnayi@gmail.com -
WHATSAPP NO. 91-9785837924

अनुक्रमाणिका

क्रम संख्या	विवरणिका		पृष्ठ संख्या
	लेख –	लेखक	पृष्ठ संख्या
1	मानव जीवन में शिक्षक का महत्व	बृजेश कुमार	1 - 5
2	भारत मेरा भारत	दुर्गा माहेश्वरी	6 -10
3	मुखौटे के पीछे कौन	डॉ शिवा धमेजा	11 -14
	कविता		
4	नीड़ का निर्माण फिर फिर	हरिवंश राय बच्चन	15 -17
5	वर्तमान व्यवस्था की सच्चाई	विनोद मानवी	18 - 21
6	कृष्ण अर्जुन संवाद	बृजेश कुमार	22 - 26
7	मेरी प्यारी माँ (नन्ही कलम से)	अंजली साहू	27
	कहानी		
8	सुनवाई	अलका प्रमोद	28 – 32
9	सौ बरस के लिए ईश्वर	डॉ शिवा धमेजा	33 – 36
10	पहचान	आशा शैली	37 – 48
11	गीत – लाश कंधे पर लिए कब तक	अशोक रक्ताले	49 – 50
12	लोक कथा – माँ पन्ना धाय का त्याग		51 – 56
13	आलेख – हिन्दू ह्रदय सम्राट – महाराजा सूरजमल	बृजेश कुमार	57 – 66
14	ऐतिहासिक स्थल एक नजर – चित्तौडगढ़ (राजस्थान)		67– 72
15	साहित्य अकादमी पुरस्कार के बारे में जानिए		73 - 76

	साक्षात्कार		
16	साक्षात्कार – साहित्य (बोहती ढांडा)		77 - 84
17	साक्षात्कार – आर. जे. एस. (पुलकित शर्मा)		85 - 90

मानव जीवन में शिक्षक का महत्व

दीपक की भांति होता है शिक्षक,

स्वयं जलकर प्रकाश फैलाता है शिक्षक,

उन्नति का मार्ग दिखाता है शिक्षक,

ज्ञान की गंगा में नहलाता है शिक्षक,

इसलिए तो शिक्षक साधारण नहीं होता,

मिट्टी को सोना बनाता है शिक्षक!

"शिक्षक"

भारतीय संस्कृति में शिक्षक के लिए गुरु शब्द का प्रयोग किया गया है! जिसका अर्थ होता है- ज्ञान देने वाला अर्थात अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाला! बच्चों की जिंदगी में मां के बाद शिक्षक की बहुत बड़ी भूमिका होती है! वह बच्चे को किस तरह ढ़ालता है, यह निर्भर करता है उसकी योग्यता पर! अगर शिक्षक का शाब्दिक अर्थ देखे तो पता चलता है कि शिक्षण का कार्य करने वाला अर्थात अध्ययन-अध्यापन कराने वाला!

"जिस प्रकार एक कुम्भकार मिट्टी को तरह-तरह की आकृति में ढ़ाल देता है उसी प्रकार बच्चे के भविष्य का निर्माता उसका शिक्षक ही है!"

अनेक लेखकों ने शिक्षक शब्द की अलग-अलग व्याख्या की है –

"शिष्य के मन में सीखने की इच्छा जागृत करने वाला – शिक्षक!"

"कमजोरी को दूर कर शिखर तक ले जाने वाला – शिक्षक!"

यह सब का अपना एक मत है लेकिन सच यह है कि शिक्षक ही बच्चे का भविष्य निर्माता होता है! प्राचीन काल हो या वर्तमान, भारतीय संस्कृति में शिक्षक/गुरु का पद ईश्वर के समकक्ष बताया गया है! जैसे ईश्वर सर्वशक्तिमान होने पर भी कभी गलत नहीं करता है, वैसे ही शिक्षक अपने शिष्य का कभी बुरा नहीं सोच सकता! शिक्षक ही है जो बच्चे के मन में प्रगति, उन्नति तथा सपनों को साकार करने की भावना पैदा करता है! शिक्षक की शिक्षा ही है जो हमारे जीवन को सही दिशा निर्देश देती है और हमें सफलता के मार्ग पर आगे ले जाती है! यदि शिक्षक ने होते तो शायद हमारा समाज या यह कहे पूरा विश्व इतना आगे नहीं बढ़ा होता! सीखना एक अलग प्रक्रिया है लेकिन सीख कर सीखना एक अलग चीज है! जरूरी नहीं कि सीखने वाला वही चीज दूसरे को सिखा सके! माता-पिता तथा भगवान के बाद शिक्षक की होता है जो बच्चे का भविष्य तय करता है!

स्वामी विरजानंद सरस्वती जैसे आचार्य ने इस समाज का राष्ट्र को जो अमूल्य शिष्य दयानन्द सरस्वती दिया है! जिसने अपने राष्ट्र की धरोहर वेद ज्ञान तथा गुरुकुल शिक्षा को पुन स्थापित करने का प्रयास किया! समाज में फैली कुरीतियों तथा आडंबरो का पुरजोर विरोध किया! अपना पूरा जीवन राष्ट्र तथा समाज की सेवा के लिए निछावर कर दिया! यह अपने आप में एक अद्भुत कार्य है!

आचार्य चाणक्य ने घनानंद को चुनौती देते हुए कहा कि –
"घनानंद शिक्षक साधारण नहीं होता, निर्माण और प्रलय उसकी गोद में पलते हैं! अगर मुझ में सामर्थ्य है, तो मैं अपने पोषण करने वाले सम्राटों का निर्माण कर लूंगा!"

यह प्रतिज्ञा आचार्य चाणक्य ने अपनी शिष्य चंद्रगुप्त का निर्माण कर पूरी की और अपनी योग्यता के बल पर चंद्रगुप्त जैसे निर्धन और गरीब बालक को चक्रवर्ती सम्राट बना दिया! यह होती है शिक्षक की भूमिका!

शिक्षक के विषय में महापुरुषों के विचार –

"अच्छा शिक्षक वह है जो जीवन पर्यंत विद्यार्थी बना रहता है और इस प्रक्रिया में वह केवल किताबों से नहीं अपितु विद्यार्थियों से भी सीखता है!"

- डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन

"मैं शिक्षक हूं, यदि मेरी शिक्षा में सामर्थ्य है, तो अपना पोषण करने वाले सम्राटों का निर्माण मैं स्वयं कर लूंगा" **– चाणक्य**

"एक सभ्य घर जैसा कोई स्कूल नहीं है और एक भद्र अभिभावक जैसा कोई शिक्षक नहीं है" **- महात्मा गांधी**

"केवल एक चीज जो मुझे सीखने में हस्तक्षेप करती है, वो है मेरी शिक्षा"

– अल्बर्ट आइंस्टीन

"मैंने जो कुछ भी सीखा है, किताबों से सीखा है"

– अब्राहन लिंकन

"शिक्षा की जड़े कड़वी होती हैं, मगर फल मीठा होता है"

- अरस्तु

"शिक्षक समाज के दर्पण को स्वच्छ रखने का वह कार्य करता है जिस में आने वाली पीढ़ियां अपने अच्छे एवं गलत विचार रूपी मुंह को देखने में भली भांति सक्षम हो पाती है! हम जैसे हैं उसमें हमारे पूर्व शिक्षकों का अतुल्य योगदान है, भविष्य में जो व्यक्ति होंगे उसमें हमारी भूमिका भी प्रमुखता से लिखी जाएगी, अतः सावधान होकर अपने कर्तव्य का पालन करें"

– अज्ञात

लेकिन प्राचीन काल और वर्तमान के शिक्षक में उनकी कथनी और करनी में बहुत अंतर आ गया है! अब शिक्षा व्यापार बन कर रह गई है! आज शिक्षक की स्थिति वेतन भोगी के सिवाय कुछ नहीं है! इसलिए आज की स्थिति को देखकर किसी ने कहा है –

गुरु लोभी चेला लालची, दोनों खेल दाव!

भवसागर में डूबते, बैठ पत्थर की नाव!!

जबकि शिक्षक इस राष्ट्र तथा समाज की जड़े हैं! जिस प्रकार जड़ के हिल जाने पर पेड गिर जाता है, उसी प्रकार एक उत्तम शिक्षक के बिना शिष्य का निर्माण नहीं हो सकता है! अतः शिक्षक को अपने कर्तव्य को समझ कर, बच्चों को शारीरिक मानसिक बौद्धिक रूप से तैयार करना चाहिए! क्योंकि छोटे बच्चे मिट्टी की तरह है, जैसा शिक्षक डालेगा, बस वैसे ही ढल जाएंगे! आज शिक्षक और शिष्य के बीच दूरी बनती जा रही है, वे भी समाप्त होगी! तभी हम सही अर्थ में कह सकेंगे कि शिक्षक ही अपने शिष्य का सच्चा सही पथ प्रदर्शक है!

बृजेश कुमार

भारत मेरा भारत

यह एक अप्रिय तथ्य है कि सन् 1947 में भारत द्वारा स्वतन्त्रता प्राप्ति के अवसर पर भारत का विभाजन धर्म के आधार पर किया गया | पृथक राष्ट्र इस मान्यता के आधार पर हिन्दू और इस्लामिक दो राष्ट्रों की परिकल्पना को मौन स्वीकृति प्रदान करते हुए भारतमाता का अंग - भंग किया गया था उसी क्षण हमारे कर्णधारों के मन में यह बात बैठ गई कि धर्म को राजनीति से पृथक रखना चाहिए ! अपने इस संकल्प को साकार करने के विचार से उन्होंने भारत के संविधान में भारत को एक **धर्मनिरपेक्ष राज्य** (Secular State) घोषित किया!

धर्म का अर्थ

धर्म को सामान्यतः अंग्रेजी के शब्द Religion के अर्थ में प्रयोग किया जाता है और उसको मत, पंथ, मजहब आदि के रूप में ग्रहण किया जाता है | रिलीजन (Religion) की अवधारणा अलौकिक विश्वासों तथा अति प्राकृतिक शक्तियों से सम्बद्ध है , जबकि धर्म भावना में किसी प्रकार के अलौकिक के प्रति विश्वास के लिए कोई स्थान नहीं है हमको यह जानकर आश्चर्य नहीं करना चाहिए कि धर्म ग्रन्थों एवं आचार संहिताओं में जहाँ धर्म के लक्षण बताए गए हैं | वहाँ आत्मा , परमात्मा अथवा किसी अति प्राकृत एवं अधि - प्राकृत की चर्चा नहीं की गई है |

यथा- धारण करने के कारण ही धर्म कहलाता है, धर्म प्रजा को धारण करता है- (महाभारत)

धैर्य , क्षमा , दम , अस्तेय , शौच , इन्द्रिय - निग्रह , तत्वज्ञान , आत्मज्ञान , सत्य और आक्रोध ये दस धर्म के लक्षण हैं | (मनुस्मृति)

डॉ . राधाकृष्णन ने धर्म की भारतीय अवधारा को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि "जिन सिद्धान्तों के अनुसार हम अपना दैनिक जीवन व्यतीत करते हैं तथा जिनके द्वारा हमारे सामाजिक सम्बन्धों की स्थापना होती है , वे सब धर्म है धर्म जीवन का सत्य है और हमारी प्रकृति को निर्धारित करने वाली शक्ति है" इस दृष्टि से धर्म कर्त्तव्य भावना का वाचक ठहरता है ।

महाभारतकार ने सामाजिक स्वास्थ्य को दृष्टिगत करके नागरिकों को आदेश दिया है । कि "सावधान होकर धर्म का वास्तविक अर्थ सुनो और उसी के अनुसार आचरण करो जो कुछ तुम अपने लिए हानिप्रद और दुःखदायी समझते हो , वह दूसरे के साथ मत करो" |

पाश्चात्य चिन्तन में भी हमको कर्त्तव्यपरक धर्म की अवधारणा मिल जाती है | जर्मनी के दार्शनिक कवि गेटे का कथन है कि

"सच्चा धर्म हमें आश्रितों का सम्मान करना सिखाता है और मानवता, निर्धनता, मुसीबत , पीड़ा एवं मृत्यु को ईश्वरीय देन मानता है !

विश्ववन्य पूज्य महात्मा गांधी प्रायः यह कहा करते थे " मेरा विश्वास है कि बिना धर्म का जीवन बिना सिद्धान्त का जीवन होता है और बिना सिद्धान्त का जीवन वैसा ही है जैसा कि बिना पतवार का जहाज | जिस तरह बिना पतवार का जहाज

मारा - मारा फिरेगा , उसी तरह धर्महीन मनुष्य भी संसार - सागर में इधर - उधर मारा - मारा फिरेगा और अपने अभीष्ट स्थान तक नहीं पहुँचेगा !

चूँकि राजनीति हमारे जीवन का अभिन्न अंग है | अतः उसका भी धर्म होना चाहिए अर्थात् वह भी कतिपय मान्यताओं पर आधारित होनी चाहिए | धर्मविहीन राजनीति असामाजिक होगी और वह हमारे लिए हितकर नहीं है |

धर्म और राजनीति का सम्बन्ध

भारत में धर्म को राजनीति का मार्गदर्शक माना गया है और इसी दृष्टि से राजा के धर्म का राजा के कर्त्तव्य का स्वरूप - निर्धारण किया गया है- " राजा यदि आलस्य छोड़कर दण्ड देने लायक अपराधी को दण्ड न दे तो बलवान दुर्बलों को लोहे के कॉटे में पकड़ी हुई मछलियों की तरह खा डालें " तथा " राजा शास्त्र के अनुसार मंत्रियों द्वारा प्रजा से वार्षिक कर वसूल करे और अपनी प्रजा के साथ पिता के समान व्यवहार करे | " (मनुस्मृति)

इस आदर्श का पालन करने वाले राजा के प्रति किसी को विरोध नहीं होता है आधुनिक संदर्भ में यदि कोई राजनेता उक्त आदर्श का अनुसरण करता तो - “न राजनेता से विरोध हो सकता है और न ही राजनेताओं का निर्माण करने वाली राजनीति से |” तो किसी को किसी से भी शिकायत नहीं होगी |

कालान्तर में धर्म के मनमाने अर्थ लगाकर शासक धर्म के नाम पर प्रजा पर अत्याचार करने लगे अथवा जनता का शोषण करने लगे | तब से राजनीति के क्षेत्र में 'रिलीजन' को अछूत समझा जाने लगा | लोग धर्म के मूल अर्थ को भूल गए और रिलीजन के समकक्ष धर्म को मानकर धर्म से परहेज करने लगे | राजनीति के संदर्भ में धर्म और रिलीजन का एक ही अर्थ में प्रयोग किया जाने लगा है |

राजनीति का धर्म हो

धर्म के नाम पर राजनीति के अभिशप्त बन जाने का मुख्य कारण यह है कि स्वार्थपरता के कारण हम लोगों ने धर्म के वास्तविक अर्थ को भुला दिया है तथा गांधीवादी जीवनदर्शन को अस्वीकार कर दिया है |

धर्म वस्तुतः मानवता एवं नैतिकता का पयार्य है | इस दृष्टि से मानवमात्र का धर्म केवल एक धर्म , मानव धर्म ठहरता है | संविधान में यदि भारत का धर्म मानव धर्म मान लिया गया होता , अथवा मान लिया जाए , तो धर्म के नाम पर उत्पन्न उन्माद एवं आतंक को सहज ही नियंत्रित कर लिया जाए , क्योंकि तब हम मजहवी कट्टरता को बुरा - भला कहेंगे , न कि धर्म से उत्पन्न काल्पनिक संकीर्णता पर आँसू बहाना चाहेंगे |

महात्मा गांधी धर्म और रिलीजन के भेद को समझते थे | उन्होंने राजनीति में धर्म भावना अथवा नैतिकता का समावेश करके विश्व को सत्य एवं अहिंसा का संदेश दिया था | सत्य का व्यावहारिक रूप अहिंसा है और धर्म नैतिकता का पर्याय है | राजनीति में नैतिकता का समावेश करके गांधीजी ने राजनीति का शुद्धिकरण किया और धर्म क पर राजनीति करने वालों को अलग - थलग करने का प्रयास किया | उनका मत सर्वथा स्पष्ट था कि "जो चीज विकार को मिटा सके , राग - द्वेष को कम कर सके, जिस चीज के उपयोग में मन सूली पर चढ़ते समय भी सत्य पर डटा रहे, वही धर्म की शिक्षा है, मैं इस बात से सहमत नहीं हूँ कि धर्म का राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं है, धर्म से विलय राजनीति मृत शरीर के तुल्य है, जो केवल जला देने योग्य है"

देश की जो राजनीतिक मान्यताएं हैं , उनका अनुसरण करना और देश के संविधान के अनुसार देश के जो राजनीतिक उद्देश्य हैं | उनकी पूर्ति करना , यही

राजनीति का धर्म होना चाहिए भारत जैसे विशाल देश में अपने संविधान की सीमाओं में कार्य करना राजनीति का धर्म होना चाहिए | इसके बाहर जाने का अर्थ होगा राजनीति के धर्म का उल्लंघन, इस दृष्टि से संविधान में संशोधन करने के पूर्व खूब सोच - समझ लेना चाहिए | जहाँ तक सम्भव हो यथास्थिति वाली नीति अपनाई जानी चाहिए , क्योंकि एक बार छूट हो जाने पर छूट का अन्त नहीं होता है | भारत इसका ज्वलन्त उदाहरण है | प्रतिवर्ष औसतन दो संशोधन करके संविधान को अपना अनुगामी बनाकर क्या हम राजनीति में धर्म को अलग नहीं बता रहे हैं |

दुर्गा माहेश्वरी

मुखौटे के पीछे कौन ?

मैं ही तो हूँ, वो ! जो कभी किस रंग में तो कभी किस रंग में ! वो कौनसा रंग है जो मेरा है, इन सब में से ! कोई नहीं !

इंसान कितनी बखूबी छिपा लेता है असलियत को, ऐसी कमाल की प्रतिभा केवल हम मनुष्यों में ही तो होती है !

शेर, शेर ही दिखता है , वो कभी हिरन जैसा दिखने या होने का प्रयास नहीं करता !

सांप, सांप ही दिखता है, हम उससे संभल कर चल सकते हैँ ! अगर सांप में खुद पर चींटी का मुखौटा लगाने की क्षमता आ जाती तो सोचिये कितने डंक जीवन में हमें लग जाते! लेकिन सांप कितना भी जहरीला क्यों न हो वो अपने जहर को ढक कर यानि छिपा कर नहीं रखता! इसलिये उसकी यह सबसे बड़ी ख़ूबसूरती है कि वो सांप है पर सच्चा है, बिना मुखौटे के है ! बिल्ली शेर बनकर डराती नहीं ! औऱ शेर बिल्ली का रूप बनाकर हमारे आस पास रह सकता नहीं !

कितना सच्चा है सब जानवरों के जंगलों में, हम इंसानों के जंगलों में किस चेहरे के पीछे कौनसा चेहरा छिपा है – ये सच कभी कोई नहीं जान सकता !

सबको पता होता है शेर हिंसक जानवर है, इससे बच कर रहना है, नहीं तो खा जायेगा !

मगर ये इंसान ? जिसको कोई नहीं जानता कि कब यह किस रूप में होगा?

जो हिंसक भी हो तो हम बेखबर होते हैँ औऱ वो कब हमें खा जाता है, पता ही नहीं चलता ! औऱ कोई हिंसक ना हो, बहुत स्नेहिल भी हो तो हम उससे डरने लगते हैँ, उस पर शक करने लगते हैँ ! सोचते हैँ कि बनता तो अच्छा है ऊपर से, असली में ऐसा नहीं होगा !

"सच्चे पर शक औऱ झूठे पर विश्वास ! तभी तो यहाँ इंसानों के जंगलों में कोई किसी का नहीं, कितनी भी सावधानी बरतो, हम शिकार हो ही जाते हैँ – धोखे मिल ही जाते हैँ औऱ जानवरों के जंगलो में सावधानी बरत कर खुले शेर से भी बच कर हम सही सलामत आ जाते हैँ !"

क्यों ? क्योंकि शेर ने मुखौटे तो नहीं लगाए औऱ हम बड़े कुशल हैँ –'तरह - तरह के मुखौटे लगा लेते हैँ !

इसलिये सिनेमा जगत में भी एक गाना बहुत प्रचलित हुआ –

"एक चेहरे पर कई चेहरे लगा लेते हैँ लोग !"

इस कार्य में इतने पारंगत होते हैँ हम कि एक ही समय में कई भूमिकाओं को निभा लेते हैँ !

इंसानी बुध्दि का बड़ा गैर कानूनी प्रयोग है ये ! जिसकी कोई सजा नहीं ! सजा तो क्योंकि तब हो सकती है ज़ब अपराध साबित हो !

मुखौटे लगाकर जीने को कोई अपराध ही नहीं मानता ! इंसान ने डिग्रियों से बुद्धि को इतना विकसित कर लिया है कि कितने भी खूबसूरत ढंग से अपनी बदसूरती को छिपाने में सफल हो जाता है !

काश कि बहुरुपिया इंसान, जानवरों की तरह उसी रंग का होता, जो उसका अपना व्यक्तित्व होता, चाहे अच्छा होता या बुरा ! चाहे काला होता या सफ़ेद ! चाहे वो

आस्तिक होता या नास्तिक ! जैसा होता बस वैसा होता ! सबसे सुन्दर उसका असली रूप होता ! तब वो कुरूप होकर भी आकर्षक लगता !

वो पुराने जमाने जैसा होता कि सीधा, सच्चा ! चाहे उसकी अलमारियों में जीत के प्रमाण कई मैडल ना होते लेकिन कई अबोले, अव्यक्त, पुण्य कर्मों से उसके खाते भरे होते !

अपने चेहरे पर से दूसरे चेहरे को उतार फेंके तो हम वो पाक – पवित्र – साफ चेहरा पा लेंगें, जो ईश्वर की भेंट है – हम स्वयं !

हम स्वयं, स्वयं के पास और सबके साथ एक जैसे, सच्चे रूप में !

डॉ. शिवा धमेजा
लेखक

नीड़ का निर्माण फिर-फिर,

हरिवंश राय बच्चन

नीड़ का निर्माण फिर-फिर,
नेह का आह्वान फिर-फिर!

वह उठी आँधी कि नभ में
छा गया सहसा अँधेरा,
धूलि धूसर बादलों ने
भूमि को इस भाँति घेरा,

रात-सा दिन हो गया, फिर
रात आई और काली,
लग रहा था अब न होगा
इस निशा का फिर सवेरा,

रात के उत्पात-भय से
भीत जन-जन, भीत कण-कण
किंतु प्राची से उषा की
मोहिनी मुस्कान फिर-फिर!

नीड़ का निर्माण फिर-फिर,

नेह का आह्वान फिर-फिर!

वह चले झोंके कि काँपे

भीम कायावान भूधर,

जड़ समेत उखड़-पुखड़कर

गिर पड़े, टूटे विटप वर,

हाय, तिनकों से विनिर्मित

घोंसलो पर क्या न बीती,

डगमगाए जबकि कंकड़,

ईंट, पत्थर के महल-घर;

बोल आशा के विहंगम,

किस जगह पर तू छिपा था,

जो गगन पर चढ़ उठाता

गर्व से निज तान फिर-फिर!

नीड़ का निर्माण फिर-फिर,

नेह का आह्वान फिर-फिर!

क्रुद्ध नभ के वज्र दंतों

में उषा है मुसकराती,

घोर गर्जनमय गगन के

कंठ में खग पंक्ति गाती;

एक चिड़िया चोंच में तिनका

लिए जो जा रही है,

वह सहज में ही पवन

उंचास को नीचा दिखाती!

नाश के दुख से कभी

दबता नहीं निर्माण का सुख

प्रलय की निस्तब्धता से

सृष्टि का नव गान फिर-फिर!

नीड़ का निर्माण फिर-फिर,

नेह का आह्वान फिर-फिर!

वर्तमान व्यवस्था की सच्चाई

आज करें हम बात देश की

देश हमारा बिगड़ा है।

नेताओं ने मंत्री बंन कर

देश हमारा रिगडा है ॥

पुलिस हमारी अत्याचारी

चारधाम हैं थाने जी ।

बिन पैसे के काम करे ना

थानेदार ना माने जी ॥

स्कूलों की हालत देखो

टीचर मस्ती मार रहे

बच्चे गुटखा -जर्दा खावे

बच्चों को ना डांट रहे ,

कहा बताऊ बात देश की

गंदगी हम फैलाते हैं।

कुत्ता -बिल्ली मरे सड़क पर

उनको ना दफनाते हैं ॥

कहे मानवी सुन मेरे भाई

बात समझ में ना आई

बेटा हमने 4 करें हैं ।

बेटी हमने मरवाई

बेटी बचाओ , बेटी पढ़ाओ

यही हमारा नारा है ॥

देश के सैनिक वीर बहादुर

दुश्मन को ललकारा है।

भगत सिंह की तरह देश में

तुम भी ऐसा काम करो

गांधीजी के सपनों की खातिर

भारत मां से प्यार करो

वर्तमान की बात करें हम

हम तो वह सुल्तान हैं ॥

भारत मां को अमरीका में

मिलता अब सम्मान हैं ।

लेकिन बच्चों सुनो कहानी

भक्त देश का बनना है ॥

अब्दुल (कलाम) के सपनों को

साकार तुम्ही को करना है ।

अमेरिका -जापान ,चीन हो

अब ना तुम को डरना है ॥

लाल किले की प्राचीर से

भारत मां की गरिमा है।

वंदे मातरम् -वंदे मातरम् ,जय हिंद!

विनोद मानवी

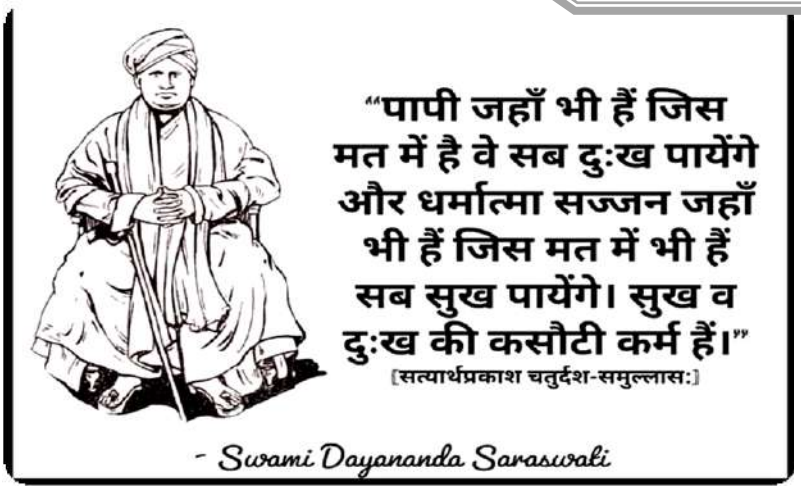

कृष्ण-अर्जुन युद्ध संवाद

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।

मा कर्मफलहेतुर्भुर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि ॥

जब श्री कृष्ण ने शांति प्रस्ताव में पांडवों के लिए पांच गाँव देने की बात कही, तब दुर्योधन ने एक इंच जमीन देने से मना कर दिया! तब महाभारत के युद्ध का द्वार खुल गया और कुरु सेना , पांडवों की सेना कुरुक्षेत्र में आ गई । युद्ध की दोनों ओर से शंख तथा दुंदभी बजने लगी ! तब अर्जुन अपना गाण्डीव हाथ से गिरा देता है । तब श्री कृष्ण पार्थ को जो कहते हैं , उससे आगे कविता शुरू होती है-

हे पार्थ उठो! अब युद्ध करो ,

कायरता नपुंसक का गहना है,

गाण्डीव उठा गर्जन कर डालो ,

समर भूमि में हलचल कर डालो ,

पाँचजन्य को फूंका रण में ,

इसकी अब तुम लाज बचा लो ।

शोक तुम्हें न शोभा देता ,

रण में केवल योद्धा होता ,

रिश्ते - नाते ना होते रण में ,

वीरों को ना रोते देखा ,

केवल रक्त पात होता है ,

विजयश्री का लक्ष्य होता है ।

जिनको तुम अब देख रहे हो ,

केवल यह अधर्मी योद्धा हैं ,

जो चुप बैठे थे राजसभा में ,

चौसर होते देख रहे थे ,

आर्यों की मर्यादाओं को खंड-खंड करके ,

सब पर पानी फेर रहे थे !

सिंह नाद की जगह ,

श्रगाली आवाज़ सुनाई देती है ,

पुत्र मोह के आगे राजन

मजबूर दिखाई देते हैं ,

नारी का चीर हरण होने पर ,

शस्त्र ना जिनके उठते हैं ,

मानो अब खून नहीं वीरों का ,

बुजदिल बनकर बैठे हैं !

ऐसे इन अधर्मी लोगों का ,

मिट जाना ही अच्छा है ,

हे पार्थ सुनो , इस धर्म युद्ध में ,

शस्त्र उठाना अच्छा है ,

जिससे वीरों की शोभा हो ,

धर्म ध्वजा आगे को बढ़े ।

इतना सुनकर पार्थ बोला ,

हे केशव! कैसे बाण चला दूँ मैं ,

विजयश्री के लिए

अपनों को मार गिरा दूँ मैं ,

इन्हीं हाथों ने बचपन में ,

सबके ही पैर दबाये हैं ,

भीष्म पितामह ने सिर को ,

चूम चूम कर

हमको भी लाड लड़ाए हैं ,

अगर बाण की नॉक करूँ मैं ,

लज्जा मुझको आती है ,

है केशव! अब मृत्यु दे दो ,

यही सीख सुहाती है ।

यह सुनकर केशव मुस्काये ,

जगत गुरु ने उपदेश सुनाये ,

जन्म मृत्यु के बंधन का ,

गीता ज्ञान सुनाते हैं ,

सुख- दुःख से आगे बढ़ने का ,

सत्य मार्ग बतलाते हैं ,

इतना सुनकर पार्थ ने

गाण्डीव हाथ में उठा लिया ,

कौरव सेना पर टूट पड़े ,

हाहाकार मचा दिया ।

- बृजेश कुमार

मेरी प्यारी माँ

माँ हमको लगती प्यारी है,

माँ की ममता ही न्यारी है!

पहले तो माँ दुलारती है,

दुलार कर हमें जगाती है!

विद्यालय के लिए फिर माँ ही,

करती सारी तैयारी है!

विद्यालय से वापस आते,

माँ को मुस्कुराते ही पाते!

हमको मुस्कुराते देखती तो,

माँ जाती बारी-बारी है!

माँ ही गंगा की धारा है,

माँ ही मेरी फुलवारी है!

मेरी माँ सबसे प्यारी है!!

अंजली साहू
कक्षा-7th
बाल भारती विद्यालय (अलवर)

सुनवाई

कनिका ने घड़ी देखी रात के ग्यारह बज गये थे पर नितिन अभी तक नही आया था ,कनिका को चिन्ता होने लगी ।नितिन उसकी आँखों का तारा था क्षण भर भी उसे उदास देखना उन्हे गवारा न था।तभी द्वार की घंटी बजी ,कनिका दौड़ कर दरवाजा खोलने गई ।उसने सोच लिया था कि आज नितिन से कह देगी कि कल से वह उसके लिये दरवाजा खोलने के लिये इतनी रात तक नही जागेगी। अगर दस बजे के बाद घर में पांव रखा तो न तो खाना मिलेगा न मैं बात करूंगी।

द्वार खोलते ही सामने खाकी वर्दी वाले को देख कर कनिका का हदय काँप उटा। कहीं नितिन के साथ तो कुछ नही हुआ इस आशंका ने उसकी सुध बुध बिसरा दी। इसके पूर्व कि वह कुछ पूछती पुलिस वाले ने कहा " यह नितिन का घर है "?

"जी हां बताइये मैं उसकी माँ हूँ वह ठीक तो है न "?

"पहले आप उसे बुलाइये तब में बताऊँगा कि वह ठीक है कि नहीं "।

"मतलब ?"

"आपके बेटे के विरुद्ध अरेस्ट वारेंट है "।

कनिका मानो आसमान से गिरी हो उसने कहा " देखिये आपको कोई गलतफहमी हुई है यह नितिन गुलाटी का घर है नितिन मेरा बेटा यूनिवर्सटी में बी एस सी का छात्र है, कोई चोर उचक्का नहीं है "।

"जी हाँ मैं उसी नितिन गुलाटी की बात कर रहा हूँ जो यूनिवर्सल कालेज में बी एस सी कर रहा है और इसी घर में रहता है "।

" क्यों क्या किया है मेरे बेटे ने ?"कनिका को अभी भी विश्वास था कि पुलिस वाले को धोखा हुआ है ,वह किसी और नितिन के भ्रम में उसे बेटे को पूछ रहा है।

उस पुलिस वाले ने कहा " आपके बेटे पर बलात्कार का आरोप है" ।

कनिका के पाँव तले जमीन खिसक गई। " नहीं नहीं मेरा बेटा ऐसा नहीं कर सकता वह शरीफ घर का बेटा है ।"

"देखिये वो कैसे घर का बेटा है मुझे उससे कुछ लेना देना नहीं है पर जिस लड़की के साथ उसने खिलवाड़ किया है उसने उसी का नाम लिया है " दरोगा ने घर का चप्पा चप्पा छान डाला फिर नितिन को न पा कर फिर आने की धमकी दे

कर चला गया । वो तो घर में सब कुछ उलट पलट कर चला गया पर कनिका के मन में जो झंझावत उत्पन्न कर गया उसके समक्ष उलट पलट कुछ न थी।

कनिका को विश्वास था कि किसी दुश्मनी में उस लड़की ने ऐसा कहा होगा ।उसने उस लड़की से मिलना तय किया। रात किसी तरह कटी पर सुबह ही वह थाने पहुँच गई । वहाँ वह लड़की और उसके घर के लोग ,मित्र और कुछ तमाशा देखने वाली भीड़ उपस्थित थी। कनिका को देखते ही किसी ने कहा " अरे यह ही तो है उस बलात्कारी की माँ " सब उसे घूर घूर कर देखने लगे , ।

लोगों ने उसे घेर लिया कोई बोला ' ' इसी को अगवा कर लो तब तो बच्चू हाथ आएंगे।' ' कुछ लोग तो उसे अपशब्द भी कहने से बाज न आये, जिन्हें सुनकर कनिका लज्जा से गड़ गई ,अपमान से उसका चेहरा लाल हो गया। वो तो पुलिस के सिपाही ने उसके अन्दर जाने का रास्ता बनाया अन्यथा पता नही कनिका उसके साथ भीड़ क्या करती। अन्दर वह लड़की बैठी थी उसकी सूजी आँखें ,चेहरे का आक्रोश और अस्त व्यस्त स्थिति उसकी सच्चाई के साक्षी थे ।संभवतः पूरी रात वह और उसका परिवार कोतवाली में ही रहे थे, फिर भी कनिका का मन न माना ,उसने उस लड़की से पूछा " क्या जो बयान तुमने दिया है वह सच है "?

मानवी बिफर पड़ी " आप क्या समझती हैं मुझे अपना तमाशा बनाने का शौक है जो मैं यह कोतवाली ,लोगों के उल्टे सीधे प्रश्नों और मेडकल चेकअप की यातना सह रही हूँ"!

कनिका सकपका गई, अपने को संयत करते हुए शान्त स्वर में उसने पूछा " नहीं मेरा मतलब है कि क्या तुम श्योर हो कि तुम्हारे साथ अनाचार करने वाला नितिन गुलाटी ही था "?

"जी हाँ वन हन्ड्रेड वन परसेंट श्योर हूँ " उसने कनिका को घूरते हुए कहा।

तभी मानवी की माँ न उसे उपेक्षा से देखते हुए कहा " आपको क्या पता एक बेटी की इज्जत क्या होती है ,आपके बेटा है न ,तो दे दी उसे खुली छूट कि जाओ बेटा जो मन में आये करो आखिर मर्द हो। "

पीछे से मानवी के पिता श्री रंजन बोले " आप अपने बेटे को चाहे लाख छिपा लें, जितने चाहें जोर लगा लें पर वह बचेगा नही कानून के हाथ बहुत लम्बे हैं"!

कनिका पर व्यंग्य के वार पे वार हो रहे थे कोई मानने को तैयार नहीं था कि उसे नहीं पता कि नितिन कहाँ है। उसे चेतावनी दे दी गई थी कि वह कहीं बाहर नही जाएगी।

किसी प्रकार आघातों से क्षत विक्षत वह घर आकर कटे पेड़ के समान ढह गई । कालेज में शिक्षिका कनिका का इतना अपमान तो जीवन में कभी न हुआ था। कनिका महिला कालेज में पढ़ाती है और स्त्री वादी बातों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेती रही है, पर आज उसकी बड़ी-बड़ी बातों की धज्जियाँ उड़ गई थीं, वह भी उसके अपने बेटे के कारण और

वह प्रश्नों के कटघरे में खड़ी थी। अचानक उसे ध्यान आया कि नितिन होगा कहाँ ,हो सकता है बेटा अपराधी ही हो पर है तो उसके हदय का टुकड़ा।उसके बारे में सोचते ही वह काँप उठी ' हे भगवान मेरे बेटे को बचा लो'

तभी उसके अन्तर्मन ने उसे टकोहा मारा " अच्छा अगर मानवी तेरी बेटी होती तो भी क्या तू यही कहती?"

उसने स्वयं से तर्क किया " क्या पता मानवी झूठ बोल रही हो " उसकी हालत देखने के बाद ऐसा मानने को मन नहीं कर रहा था।पर अपने बेटे पर ऐसे आरोप पर भी उसे विश्वास नहीं हो रहा था। उसे याद है कि उसने नितिन के पापा नवीन के जाने के बाद अकेले ही कितने लाड़ प्यार से उसे पाला है। जीवन में आये संघर्षों की तनिक भी आँच उसने नितिन पर नहीं पड़ने दी। स्वयं सारे दुख झेल कर उसे अपने आंचल की ओट में सुख के साये में छिपाए रखा।

नितिन लगभग दस वर्ष का रहा होगा जब उसने हठ ठान लिया था कि उसके सारे दोस्त कार से स्कूल आते हैं वह बस से नहीं जाएगा, तब कनिका ने अपने आफिस से अग्रिम धन ले कर एक सेकेंड हैंड कार खरीद ली थी। जब कार घर पर आई तो नितिन मारे खुशी के उसके गले लग गया था और उसको ढेर सारी किस्सी दे डाली थी। नितिन की प्रसन्नता देख कर कनिका भूल गई थी कि इस अग्रिम की कटौती के लिये उसे कहाँ-कहाँ अपनी आवश्यकताओं में कटौती करनी पड़ेगी। एक नितिन ही तो उसके जीने का सहारा था, उसकी हर इच्छा पूरी करके मानो वह अपनी इच्छाएं पूरी करती थी। नितिन बड़ा होता गया साथ ही उसकी फरमाइशें भी । कभी कभी कनिका उसकी इच्छाएं पूरी करते-करते हाँफ जाती थी पर नितिन उसकी कमजोरी था उसके मुख पर उदासी वह देख न पाती।

पर आज जो हुआ उसकी तो उसने कल्पना भी नहीं की थी। उसके मन अभी भी नहीं मान रहा था कि उसका बेटा, अपना खून ऐसा कर सकता है।क्या उससे कहीं संस्कार देने में चूक हुई है ,पर वह तो सदा उसे बचपन में अच्छी बातें ही बताती थी । उसके मन ने उसे आश्वासन देना चाहा , क्या पता किसी के दबाव में या नितिन से शत्रुता में किसी और का दोष नितिन पर मढ़ रही हो? उसका बेटा ऐसा नहीं कर सकता ।इस तर्क में उसे एक आस की किरण दिखाई दी, वह व्यग्र हो गई नितिन से मिलने को। नितिन का फोन मिल नहीं रहा था उसके सभी दोस्तों को वह काल कर चुकी थी। उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसे कैसे ढूँढे।वह तो पुलिस का सहारा भी नही ले सकती थी पुलिस तो उसे स्वयं ही ढूँढ रही है और भगवान करे वह पुलिस को न मिले ,नहीं तो भले वह अपराधी हो या न हो पुलिस उसका पता नहीं क्या हाल करेगी।

उसने टीवी खोला उस पर भी यही समाचार आ रहा था। वह किससे कहे क्या कहे। उसने एक दो अपने परिचितों को सहायता के लिये कॉल किया, पर सबने उसकी सहायता तो दूर सहानुभूति दिखाना भी उचित नहीं समझा। अगले दिन समाचारों में भी इसी काले समाचार से पन्ने रंगे थे। उसमें अपने कालेज जाने का साहस न था। उसने फोन पर अपनी अस्वस्थता को बहाना करने हेतु फोन किया पर उधर से सुनने को मिला उसने उसके पैरों तले जमीन हिला दी। उसकी प्रधानाचार्या ने कहा " देखिये मिसेज कनिका गुलाटी आपके बेटे की इस हरकत के बाद हम आपको अपने गर्ल्स कालेज में रख कर अपनी बदनामी नहीं करवा सकते ।"

‘ ‘ पर इसमें मेरा क्या दोष?” कनिका ने कहा तो उधर से आवाज आई “ संतान को संस्कार मां बाप ही देते हैं।’ ’

मानवी ने बताया था कि काफी दिनों से नितिन उसके पीछे पड़ा था पर मानवी टालती रही । उस दिन वह पीछे पड़ गया उसके साथ काफी पीने चलने के लिये । नितिन के अधिक हठ करने पर मानवी ने उसे झिड़क दिया नितिन को यह रास न आया । मानवी प्रायः कक्षा के बाद लायब्रेरी में बैठ कर पढ़ती थी।दूसरे दिन जब मानवी की सहेलियाँ चली गईं और वह लायब्रेरी में पढ़ रही थी ,तो नितिन ने उसे किसी से झूठा संदेश भिजवाया कि मानवी को केमिस्ट्री की रंजना मैडम लैब में बुला रही हैं। यद्यपि कालेज समाप्त हो चुका था पर मानवी ने सोचा, होगा कोई काम अतः वह चली गई।लैब में जब मानवी पहुँची तो वहाँ कोई न था ,वह इसे किसी का मजाक समझ कर लौटने को हुई कि वहाँ छिपे नितिन ने दरवाजा बन्द कर लिया और उसके साथ व्यभिचार किया। लैब थोड़ा दूर था और कालेज का समय समाप्त हो चुका था अतः मानवी की चीख कोई सुन नहीं पाया। कनिका मन ही मन विश्लेषण कर रही थी कि ऐसा क्यों हुआ । भले उसने बेटे को गलत बातें नहीं सिखायीं पर शायद उसकी हर इच्छा को पूरी करके उसे निरंकुश बना दिया। उसने जो चाहा वो पाया इसी लिये तो वह मानवी की ‘न’ को सह नहीं पाया।मानवी का अभी तक घर न आना उसे दोषी सिद्ध कर रहा था।

काश! वह बेटे के प्यार में अंधी न होती ,उसके क्रिया कलापों ,उसकी हठी प्रकृति को देख पाती ,काश! वह थोड़ी सी कठोर बन करे नितिन को संयम का पाठ भी पढ़ा पाती।अब बहुत देर हो चुकी थी कनिका फफक-फफक कर रो पड़ी ।उसे मानवी के बारे में सोच कर ही स्वयं से घृणा होने लगी। भले ही मानवी तथा अन्य लोग उसे नफरत से देख रहे थे पर वह भी एक स्त्री होने के नाते मानवी की पीड़ा को अनुभव कर पा रही थी और कोई समय होता तो वह अब तक नारी वाद का झंडा उठा कर निकल चुकी होती पर यहाँ तो दुश्मन उसका अपना बेटा था ।

तभी बाहर घंटी बजी वह बाहर गई तो पुलिस के सिपाही ने बताया कि नितिन पकड़ा गया और उसे थाने बुलाया गया है कनिका उसी हालत में थाने की ओर चल दी।

पुनः भीड़ के आक्रोश और व्यंग्य का तीर सहते कोतवाली पहुँची। नितिन ने उसे देख कर चैन की साँस ली बोला “ मम्मा मैं आपका ही इन्तजार कर रहा था। देखो मुझे बचाओ कोई बड़ा वकील करके मेरी जमानत कराओ”!

“बेटा जो आरोप तुझ पर लगा है क्या वह सच है ?” कनिका ने पूछा।

‘ ‘मम्मी अब कम से कम आप मेरी इन्क्वायरी न करो, किसी तरह मुझे बाहर निकालो।’ ’

नितिन के इस उत्तर ने उसकी रही सही आशा भी समाप्त कर दी। कनिका के तन बदन में आग लग गई वह भूल गई कि नितिन उसका बेटा है उसने नितिन को कई झापड़ जड़ दिये और कहा “तूने ऐसा नीच काम क्यों किया?”

नितिन ने चिढ़ कर कहा “ मम्मी आप मेरी मम्मी हैं कि उस लड़की की?”

कनिका ने कहा "यही तो दुख है कि मैं तेरी माँ हूँ, तूने दुष्कर्म भले मानवी के साथ किया है पर इज्जत मेरी लुट गई है कोई अन्तर नहीं है मेरी और उसकी पीड़ा में। उसकी कम से कम सुनवाई तो है पर मेरी तो कोई सुनवाई भी नहीं है"!यह कह कर कनिका वहीं धरती पर गिरकर मुँह ढाप कर बिलख पड़ी।

अलका प्रमोद

सौ बरस के लिए ईश्वर

डॉ. शिवा धमेजा

कितने मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारे, कितनी पूजाएँ, विधि-विधान, सबका एक लक्ष्य, ईश्वर मिल जाये तो जीवन धन्य हो !

जीवन तो धन्य ही है, हम ही आँखों पर पट्टी लगाये हुए हैं ! कभी- कभी हम उस चीज की तलाश कर रहें होते हैं, जो हमारे ही पास होती है ! ईश्वर की तलाश भी कुछ ऐसी ही है ! वो शक्ल सूरत धारण करके हमारे साथ उठते बैठते हैं, बात करते हैं, यहाँ तक कि हमारे लिए बहुत प्यार से खाना बनाते हैं, फिर प्यार से अपने हाथों से हमें खिला ते भी हैं !

ईश्वर सब बच्चों के पास होते हैं 100 बरस के लिए और उतने ही बरस हम उनसे भागने, उनसे दूर जाने में लगा देते हैं ! जो ईश्वर 100 बरस साथ रहते हैं! वो घर में अकेले होते हैं, और हम उन्हीं को ढूंढ़ने मंदिर की लाइनों में जाकर लग जाते हैं !

कितनी विचित्र है प्रभु की माया !

दरअसल जीवन का सबसे बड़ा सत्य है कि जो वस्तु जितनी सहज आपको मिल जाती है, उतनी ही उसकी कीमत गिर जाती है! माता- पिता भी ऐसे ही हैँ, उनके प्रेम पर इतना अटूट भरोसा होता है हमें कि हम सौ प्रतिशत जानते हैं कि अपमान की कोई भी सीमा, उनके मन से हमारे लिए बुरे भावों को जन्म तक देने में सफल नहीं हो पायेगी ! वो फिर भी हज़ारों हज़ार आशीर्वाद ही देंगे !"

मैं बस यूँ ही मन में भावों को आकार देती हूँ, हाथों में कभी सफाई के लिए झाड़ू, कभी बर्तनों में गीले हाथ, कलम हाथ में लें सकूँ ऐसा वक़्त मिलता नहीं! इन सब दिनचर्या के कामों में लेकिंन मन के अंदर स्याही से शब्द बनते – बिखरते ही रहते हैं !

अभी अभी आँख खुली और मैं रोज़ की तरह सबसे पहले किचन की तरफ गई, कहीं मम्मी मुझसे पहले जग कर काम में तो नहीं लग गई !

अपने सपनों को दबाकर, छुपाकर मुस्कुराते हुए, मैं काम में लग गई बिल्कुल यँत्रवत !

किचन की स्लैप साफ की, झूठे बर्तन इकठ्ठा किये ! कचरे की थैली बनाई ! गाय के खाने को अलग थैली में डाला, बाहर रखने गई तो रोज़ की तरह इंतज़ार करते दरवाजे के बाहर खड़े गली के तीन कुत्ते, उनको तोष डाले, चिड़ियों का पानी बदला ! बाहर रखी दूध की थेलियां लेकर मैं अंदर आ गई !

मम्मी अभी जगकर किचन के बाहर तक आई थी ! चाय बनाई सुबह के 7 बजे थे ¡ कुछ बिस्किट्स, नमकीन जिसके बिना चाय पीने की आदत ही नहीं मुझे !

"दिमाग़ में कविता, लेखन और चाय पीते – पीते मम्मी हर सुबह की तरह ऐसे बोलती ही चली जा रहीं थी मुझसे जैसे दुनिया भर की सब बातें एक साथ ही मुझ पर उडेल दें !" चिराग आया था, ऐसा हुआ.... वैसा हुआ !

मानसिक रूप से कुछ मिनटों के बाद , "मैं सुप्त हों जाती हूँ, उनके बोलने में कोई फुल स्टॉप नहीं होता ! मैं केवल हाँ या ना में सर हिला पाती हूँ !"

चाय की दो – तीन सिप ही ली थी ! कि बेल बज गई दरवाजे की !

चिराग आया होगा, अंशी गेट खोल दे ! दीदी चाय बना लो, वो अंदर आते ही बोला औऱ मैं अपनी बाकि बची चाय कों मम्मी के पास से किचन में ही ले आई !

चिराग की चाय बनाते- बनाते खडे- खडे ही चाय का आनंद ले लिया !

इस पिंजरे में तोते की तरह रोज़ की मेरी दिनचर्या एक जैसी ही होती है !

खैर ये क्या बड़ी बात है ? सब महिलाये करती हैँ, ! सुबह सर में इतना दर्द की हो रहा था कि कोई आज तो मुझे एक कप चाय हाथ में दे तब मैं बिस्तर से उठती! मगर ऐसा इस जीवन में एक दिन भी नहीं हुआ !

पता नहीं कौनसी किस्मत है, मुझे कुछ भी क्यों न हों, किसी कों कोई अर्थ नहीं यहाँ सिवाय मम्मी के !'

जल्दी से काम करके इस शोर से अकेले कमरे में चली जाऊँ, बस एक ही इच्छा होती है औऱ मुझे अपने लिए इन सबसे कुछ नहीं चाहिए होता, सिवाय आज़ादी के ! जो कुछ देर के लिए भी इस तरह दी जाती है जैसे तिजोरी में से निकाल कर हज़ारों अशरफियाँ दे दी हों मुझे !"

इस जीवन कों ऐसा मैंने ही बनाया, प्यार हो या नफरत सब हद से ज्यादा हो तो कुछ नहीं संभल सकता फिर ! थोड़ी तो प्रोफेशनल हो जाती मगर नहीं हो पाई ! अब तो सब पीछे छूट गया, सपने, शक्ति !'

काम करते करते बस ये ही चलता रहता है मन में ! मशीन की तरह जल्दी जल्दी काम किये, जैसे तैसे कुछ देर के लिए ऊपर वाले कमरे तक पहुँच गई ! इतने शोर से ज़ब यहाँ पहुँच जाती हूँ तो आस पास कितना भी समान फैला हो अच्छा ही लगता है ! जैसे दुखते घाव पर मरहम हो कोई !

इस दुनिया में दिखते हुए घावों पर मरहम लगाने के लिए कई डॉ हैँ मगर लहूलुहान मन पर, मरहम ईश्वर के सिवाय कोई नहीं लगाता ! मै औऱ मेरे ईश्वर फिर इस कमरे में !

ये शांति भी कुछ ही मिनटों में छीन जाती है ! घर में संस्था चलती है ! पैसा कमाने के लिए भी शोर ही होता है, शांति से कुछ नहीं हो सकता !

पूरे घर में अब एक भी कोना नहीं जहाँ दो घड़ी पैर सीधे कर बैठ सकूँ, सुबह 6 बजे से चलता शरीर केवल एक कोने में शांति से कुछ देर बैठने को तरसता है !

सब अपनी अपनी जगह सही हैँ, मगर कोई कांटे की चुभन पर तलवार के वार लगने जैसी, चिल्ला चिल्ला कर प्रतिक्रिया देता है औऱ कोई तलवार के वार को भी कांटे के चुभने की तरह , मानकर चुप रह जाता है !

ज़ब चलते फिरते जीवन को ही नहीं पढ़ता कोई..... तो इस कहानी को कौन पढ़ेगा भला ! इतना फालतू समय कहाँ होता है ?

अपनी जिंदगी पर किताब भी लिख दूँ तो रद्दी से ज्यादा कुछ नहीं होगी ! जैसे जीवन भी तोल के भाव..... वैसे ही वो भी जाएगी !

कई सालों से मैं इस खुले पिंजरे से उड़ जाना चाहती हूँ, चाहे बाहर मुझे कोई....

इस पिंजरे की अदृश्य सलाखें बड़ी विचित्र हैँ, मैं कुछ बाहर तक पहुँच भी जाती हूँ तो स्वयंमेव ही अंदर आ जाती हूँ, जैसे इस कैद के लिए हर सांस की स्वीकार्यता हो गई है मेरी ! अभी इतने पर भी काफ़ी नहीं है वार – मेरे पँखों को काटने वाले ही सुबह शाम उड़ते पक्षियों की उड़ान का उदाहरण भी देते हैं ! देख उसकी उड़ान.....

बहुत सारी पढ़ाई की मैंने, थोड़ा बहुत क़ानून भी पढ़ा, असली वाला नहीं, किताबों वाला !

ये समझ नहीं आया कि शारीरिक हिंसा के लिए धाराएं भी बनी औऱ सजाऐं भी !

लेकिन ज़ब किसी को मानसिक रूप से मारा जाता है , रोज़ मारा जाता है उसकी सजा क्यों नहीं, उस पर कोई भी धारा लागू क्यों नहीं.....फिर एकदम से आवाज आयी!

अंशी कहा हो?

मैं फिर से वहीँ पहुँच गई!ओर अपने आप को फिर से व्यस्त कर दिया!

प्रभु की वंदना, उनके सम्मुख हाथ जोड़कर स्तब्ध ख़डी हो गई!

पहचान

आशा शैली

न्यायालय के बाहरी बरामदे में भीड़ थी। सीढ़ियाँ चढ़ कर उर्मिला हाँफने लगी थी, लेकिन अभी अन्दर से आवाजें आनी शुरू भी नहीं हुई थीं। इंतज़ार तो करना ही था। उसके साथ आज और भी बहुत से लोग थे। आज उर्मिला के पक्ष में कुछ गवाह पेश होने थे।

एक बेंच पर थोड़ी सी जगह देखकर कान्ता ने कहा, "दीदी! तुम यहाँ बैठ जाओ, खड़े-खड़े थक जाओगी।"

उर्मिला बिना कुछ कहे चुपचाप बैठ गई। तभी सीढ़ियाँ चढ़ते हुए भानु पर उसकी नज़र पड़ी। भानु उसे खा जाने वाली नज़रों से देख रहा था। फिर वह अपने वकील के साथ बात करता हुआ एक तरफ खड़ा हो गया। वकील भी एक-दो मिनट बाद भीतर जज के कक्ष में चला गया। तभी उर्मिला का वकील आ गया, "उर्मिला जी, सभी गवाह आ गए हैं?" उसने पूछा।

"जी हाँ, ठाकुर साहब, सब आ गए हैं आप चिन्ता न करें।" जवाब उर्मिला के पास खड़ी कान्ता ने दिया।

"सब पक्के हैं न?"

"जी हाँ, हमने किसी को भी झूठ बोलने के लिए नहीं कहा। जो सच है वही तो बोलना है और गाँव में अभी सच्चे लोगों की कमी नहीं हुई है।"

"ठीक है, आप लोगों का केस 12 नम्बर पर है लेकिन पहले के सारे केस शराब आदि के हैं, जल्दी निपट जायेंगे। आप लोग तैयार रहिए।" कह कर वकील अन्दर जाने लगा तो भानु उसके पास आकर बोला,

"ठाकुर साहब, आप जितनी भी कोशिश कर लें, हारे हुए तो आप हैं ही। बस अब फैसले तक इंतज़ार कर लीजिए।"

"हाँ बेटा! मुकद्दमा लड़ना अब मुझे तुम से सीखना पड़ेगा। जाओ अपना काम करो, जा कर।" कह कर बूढ़े वकील 'ठाकुर' साहब, जज के कक्ष में चले गए तो भानु ने बड़े व्यंग्य और उपहास की दृष्टि से उर्मिला की ओर देखा। एक अनकही पीड़ा, वितृष्णा और विरक्ति से मुँह घुमा कर वह खिड़की से बाहर देखने लगी।

"भानु, दफ़ा हो जा यहाँ से, वरना मैं अभी पुलिस को बुला लूँगी। तू ऐसे दीदी को परेशान नहीं कर सकता।"

"मैं तो जा रहा हूँ, अभी तो तुम हो यहाँ। पर एक बात बताओ मासी! अन्दर कोर्ट में इन्हें मुझसे कौन बचाएगा?"

"ईश्वर है! वह सदा ही सच के साथ होता है, यह बात तुम भूल रहे हो। जाओ यहाँ से।" कान्ता खीज गई थी।

भानु बेशर्मी से हँसता हुआ वहाँ से एक ओर को हट गया। उर्मिला की आँखों में आँसू भर आए पर वह उन्हें पी गई। उसे अपना स्वयं से किया वादा याद आ गया कि उसे कमज़ोर नहीं पड़ना है। कान्ता ने उसके कंधे पर हाथ रखा तो उसने आश्वासन की मुद्रा में सिर हिला कर उसे देखा और फिर से बाहर देखने लगी।

न्यायालय का यह कक्ष, भवन की तीसरी मंज़िल पर बना हुआ था। खिड़की से दिखाई देते नीचे सड़क पर चलने वाले वाहन अपने नियम से भागे चले जा रहे थे।

उर्मिला को याद आया,

एक दिन जब भानु अड़ गया तो उसे अपनी तीन लाख की एफ. डी. तोड़कर भानु को ट्रक खरीदने के लिए पैसे देने पड़े थे। क्या करती, जवान और इकलौते बेटे को

कैसे मना करती? पति के बाद यही तो उसका आसरा, भरोसा और विश्वास था। फिर

ट्रक उनकी ज़रूरत भी तो था। सेब का बड़ा सा बाग़ था। भानु ने उसे विश्वास

दिलाया था कि वह अपने काम के अतिरिक्त भी उस ट्रक से कमा ही लेगा। भानु

तो भानु, उसकी पत्नी सरोज ने भी सास की हर तरह से खुशामद करनी शरू कर दी।

वैसे भी घर में सब कुछ ठीक ही चल रहा था। उर्मिला उन के आगे झुक गई। आखिर

उसका और था ही कौन? ले-दे कर यही बेटा-बहू और एक मासूम सा पोता। कुल

मिलाकर एक सुखी संसार।

भानु ने कुछ पैसा जमा करके बाकी बैंक से ट्रक फाइनेंस करवा लिया था। गाँव

के ही एक लड़के को ट्रक पर ड्राइवर रख लिया गया था। सब कुछ ठीक चल रहा था

परन्तु उर्मिला को भानु का ट्रक के साथ जाना अच्छा नहीं लगता था। एक तो

वह रात-बिरात घर लौटता और दूसरा पहाड़ की सड़कें। उर्मिला को बहुत डर लगता

था पर चिन्ता का बड़ा कारण यह भी था कि अब देर से आने के साथ ही भानु माँ

से नज़रें भी चुराने लगा था।

एक दिन बहू ने रोते-रोते उर्मिला को बताया कि भानु ने शराब पीनी शुरू कर दी है। माँ-बेटे में खूब कहा-सुनी हुई लेकिन भानु का रवैया वही रहा। बात खुलने के बाद उसकी झिझक भी खुल गई और अब तो वह घर में भी पीने लगा था।

शुरू-शुरू में वह माँ से छिपाता रहा। फिर खुलकर पीने लगा। उर्मिला कुछ न कर सकी और एक दिन वही हुआ जिसका उसे डर था।

.....

सुहानी धूप खिली हुई थी। हल्की सर्दी पड़नी शुरू हो चुकी थी। सितम्बर का आखिरी सप्ताह चल रहा था। सेब की फसल का सारा काम निबट गया था। भानु आखिरी खेप लेकर दिल्ली ट्रक के साथ चला गया था।

उर्मिला बाहर बरामदे में कुर्सी डाल कर बैठी सामने की पहाड़ियों की सुन्दरता निहार रही थी कि सरोज चाय ले आई। स्टूल घसीटकर उसने चाय उस पर रख दी और फिर अपने लिए कुर्सी खींच कर उस पर बैठ गई।

"मम्मी, चाय।"

"हाँ, लेती हूँ। देख सरोज, सामने श्रीखण्ड की पहाड़ी बारिश से धुलकर कितनी सुन्दर लग रही है।"

"हाँ मम्मी! आप ठीक ही कह रहे हैं। हमारे इलाके की खूबसूरती को तो

दुनिया मानती है। सच में पापा ने कितना सोच-समझकर यह घर बनाया होगा न?''

''हाँ, वे तो सुन्दरता के पुजारी थे।'' उर्मिला उदास हो गई। फिर उसने

स्वयं को तुरन्त ही सँभाल लिया और बात बदलकर बोली, ''भानु कब आने को कह गया है?''

''आज आ जाना चाहिए, अब किस वक्त आते हैं यह तो नहीं कहा जा सकता। सड़कें बहुत खराब हैं और कहीं रास्ते में ही पीना शुरू कर दिया तो बस.....।''

''अरे राम का नाम ले बहू! अब इतना लापरवाह भी तो नहीं है मेरा बेटा।''

कहने को उसने कह तो दिया लेकिन भीतर ही भीतर वह स्वयं भी डर रही थी। भानु

के पीने से तो अधिक परेशानी नहीं थी, लेकिन कहीं ड्राइवर ने पी ली तो?

फिर उसने सिर को झटक दिया, नहीं! भानू इतना बेवकूफ तो नहीं है....।

सरोज चाय के बर्तन अन्दर रखकर लौटी ही थी कि भीतर टैलीफोन घनघनाने लगा।

वह उल्टे पैरों वापस लौट गई।

''हलो....''

''आप तुरन्त रामपुर अस्पताल आ जाएँ।'' दूसरी ओर से किसी ने कहा, भानु की

गाड़ी का एक्सीडेंट हो गया है।''

''क्या....?'' सरोज की चीख सुनकर उर्मिला दौड़ी, उसने रिसीवर सरोज के हाथ

से छीन लिया। ''आप कौन बोल रहे हैं, क्या हुआ, मुझे बताइए। मैं उर्मिला

बोल रही हूँ।''

''आण्टी मैं वीरेंद्र बोल रहा हूँ। भानु की गाड़ी का निरथ में एक्सीडेंट हो गया है। आप लोग रामपुर आ जाइए। भानु अस्पताल में है।'' वह थोड़ा रुका फिर कहने लगा, ''परेशान न हों, ज्यादा चोटें नहीं हैं लेकिन अभी उसे वहाँ रहना पड़ेगा। टाँग की हड्डी टूट गई है प्लास्टर चढ़ेगा।''

''और ड्राइवर....?''

''ड्राइवर? हाँ, अब उसकी हालत तो गम्भीर है आण्टी।'' वीरेंद्र का स्वर म(म हो गया था।

सरोज रोए जा रही थी। उर्मिला ने उसे डाँटते हुए कहा, ''खुद को काबू में रखो बहू। हमें अभी गाड़ी की व्यवस्था करनी होगी। मैं जा रही हूँ गाड़ी के इंतज़ाम के लिए तुम बच्चे को उठाओ और एक-एक जोड़ी कपड़ा सब का रख लो। पैसे निकाल लो और चैकबुक भी ले लो। पता नहीं वहाँ क्या स्थिति हो। जल्दी तैयार हो जाओ। उठो।'' कहकर उर्मिला बाहर निकल गई।

एक घण्टे बाद ही वे लोग अस्पताल में थे। भानु के अधिक चोटें नहीं थीं लेकिन ड्राईवर को बचाया नहीं जा सका। गाड़ी बुरी तरह टूट-फूट गई थी। बीमा की रकम नहीं मिल सकती थी क्योंकि ड्राइवर और भानु, दोनों ने शराब पी रखी थी। उर्मिला सोच रही थी कि इस दुघर्टना से शायद भानु सुधर जाए, परन्तु भानु के रंगढंग में कोई बदलाव नहीं आया।

ड्राईवर के घर वालों ने क्लेम कर दिया और भानु के पास सिवाय पैसा देने के

और कोई रास्ता नहीं था। पूरा दो लाख रुपया ड्राइवर के परिवार को देकर छुटकारा हुआ। इससे उनके घर की आर्थिक स्थिति पर प्रभाव तो पड़ना ही था। रह गया बैंक? तो उर्मिला ने सोचा कि सेब की फसल में से थोड़ा-थोड़ा दे कर निपटा लिया जाएगा।

.....

दूसरे साल की फसल बेचकर जब भानु सरोज के लिए सोने का भारी सा हार खरीद लाया तो उर्मिला ने सिर पीट लिया, लेकिन अब तो यह नित्य का कार्यक्रम बन गया था।

कुछ समय बाद बैंक से भुगतान के लिए नोटिस निकला लेकिन भानु ने उसे किसी गिनती में ही नहीं लिया और फिर एक दिन पटवारी ने उर्मिला को बताया कि भानु के विरु(बैंक को नीलामी के अधिकार मिल गए हैं। एक महीने बाद नीलामी होगी।

अब भानु के पास माँ की खुशामद करने के अलावा और कोई उपाय नहीं था। जैसे-तैसे भागदौड़ कर उर्मिला ने औने-पौने में अपने हिस्से की ज़मीन का एक टुकड़ा बेच कर बैंक का भुगतान करने के लिए छः लाख रुपए फिर से भानु के हाथ पर रख दिए। नीलामी की तारीख से पहले रकम बैंक में जमा कर दी गई और कुर्की के आर्डर निरस्त हो गए।

अब उर्मिला के पास अपने हिस्से की थोड़ी सी ज़मीन बची थी जो भानु उससे माँग रहा था, जिसे देने से उर्मिला ने साफ इनकार कर दिया था। सरोज के मायके वाले भी सरोज को ज़मीन अपने नाम लिखवा लेने के लिए उकसा रहे थे। इस बीच भानु ने शहर में दुकान खोल ली और अपने परिवार के साथ वहीं रहने लगा। शहर जाकर सरोज का रवैया भी बदल गया। उसे पता था कि उसकी दुनिया उसके पति के साथ है, सास का क्या? आज है कल नहीं। रोज़-रोज़ के लड़ाई-झगड़े से तंग आकर उर्मिला ने भी उनसे बोलचाल बंद कर दी थी।

अब उसी ज़मीन के लिए भानु ने माँ पर कोर्ट में केस लगाया था जिसे बेचकर उर्मिला ने कुर्की होने से बचाई थी। भानु ने माँ पर आरोप लगाया था कि, माँ ने मेरे हिस्से की ज़मीन बेच खाई है। जबकि ज़मीन उर्मिला ने अपने हिस्से में से बेची थी। उस पर भी तुर्रा यह कि ज़मीन उर्मिला के पति की खरीदी हुई थी कोई पुश्तैनी नहीं थी और उनके देहान्त के बाद दोनों माँ-बेटों के नाम उर्मिला के कहने से ही चढ़ाई गई थी। उर्मिला के मुँह से एक ठंडी साँस निकल गई। तभी आवाज़ आई,

“भानु बनाम उर्मिला....भानु बनाम उर्मिला हाज़िर हों।”

उर्मिला चौंक कर उठ खड़ी हुई। भानु उसे धकेलता हुआ अन्दर घुसा तो वह एक ओर

हट गई और उसके पीछे-पीछे चलने लगी। गवाहों के बयान के बाद उर्मिला और भानु को कटघरे में बुलाया गया।

उर्मिला के वकील ने ही पहले प्रश्न किया, "हाँ तो मिस्टर भानु, आपका कहना है कि आपकी माँ उर्मिला ने आपके हिस्से की ज़मीन बेच खाई है?"

"इसमें कोई शक लगता है आपको?" भानु तुनक गया।

फाइल पर झुके जज ने सिर उठाकर भानु की ओर देखा। "आपसे जितना पूछा जाए उसका जवाब दीजिए।" भानु के वकील ने उसे टोका और विरोधी वकील ने सवाल दोहराया तो भानु ने सिर झुका कर कहा, "जी हाँ।"

"क्या किया इन्होंने साढ़े छः लाख रुपयों का?" अब की बार जज ने सवाल किया। वह बड़े ग़ौर से उर्मिला को देख रहा था। गम्भीर चेहरे वाली उर्मिला ने बिल्कुल साधारण से कपड़े पहन रखे थे। गले में एक पतली सी चेन और कानों में छोटे-छोटे टॉप्स थे।

"अपनी किताबें छपवाती हैं और सेमिनारों में जाती हैं। घूमने-फिरने पर खर्च कर देती हैं और क्या करेंगी।"

"आर यू ऑथर?" अब की बार जज ने उर्मिला से सवाल किया था।

"जी हाँ। यह अपराध तो मुझसे हुआ है।"

"क्या लिखती हैं आप?"

"कहानी, कविता सभी कुछ।" उर्मिला हैरान थी कि मेरे लेखन से केस का क्या

सम्बंध है?

"आपके गवाह पूरे हो गए मिस्टर ठाकुर?" जज ने मुड़कर उर्मिला के वकील से प्रश्न किया।

"जी नहीं, अभी चार हुए हैं।"

"और कितने हैं.....?"

"चार और हैं सर।" वकील ने उत्तर दिया।

"बस काफी हैं।" कहकर जज ने फाइल बंद कर दी।

बाहर कान्ता इंतज़ार में खड़ी थी। रिश्तेदार होने के नाते वह अन्दर नहीं आ सकती थी। बाहर आने पर वकील ने कहा, "मैं डेट लेकर आप को बता दूँगा। आप घर जाइए।"

000000

कुछ दिन बाद केस का फैसला भी हो गया। उर्मिला को निर्दोष कहा गया और भानु

का दावा खारिज कर दिया गया। जज ने अपने फैसले में यह भी लिखा था कि उर्मिला चाहे तो भानु पर मानहानि का दावा कर सकती है, परन्तु उर्मिला ने वह सब नहीं किया और मुकद्दमा समाप्त होने पर सुख की साँस ली। अब वह चिन्तामुक्त होकर फिर से अपने लेखन को जारी रख सकती थी।

00000

उर्मिला के सेमिनार, कवि-सम्मेलन चालू ही थे। वह शिमला बस अड्डे पर खड़ी अपनी बस के आने की प्रतीक्षा कर रही थी कि एक लम्बी-सी लग्ज़री गाड़ी उसके पास आकर रुकी और एक सौम्य सा स्वर उसकी ओर उछला, ‘‘नमस्ते उर्मिला जी।’’

उर्मिला ने चौंक कर देखा तो, कार की पिछली सीट से एक चेहरा बाहर झाँक रहा था।

वह एक बार फिर चौंक गई, ‘इस व्यक्ति को कहीं देखा तो है।’ प्रकट में उसने बड़ी शालीनता से दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार का उत्तर दिया और हैरान सी उस मूर्ति को देखने लगी।

‘‘कहाँ जा रही हैं आप? आइए मैं छोड़ दूँ।’’

‘‘जी नहीं, धन्यवाद! मेरी बस आने वाली है, मुझे चण्डीगढ़ जाना है।’’

‘‘सेमिनार है क्या?’’

‘‘जी हाँ मुशायरा है।’’

‘‘तो आइए न, मैं भी चण्डीगढ़ जा रहा हूँ।’’ इतनी देर तक भी उर्मिला उस सौम्य मूर्ति को पहचान नहीं पाई।

‘‘लगता है आप मुझे पहचान नहीं रही हैं।’’

‘‘आप ठीक कह रहे हैं।’’ उर्मिला थोड़ा लज्जित हो रही थी।

‘‘तब आप मुझे यह बताइए कि आपने अपने बेटे भानु पर मानहानि का दावा किया या नहीं?’’

"अरे आप? जज साहब?" उर्मिला की आँखें नम हो आईं।

"उर्मिला जी, मैं वास्तव में ही जज हूँ। माँ-बाप ने बहुत सारा पैसा मेरी पढ़ाई पर लगाया है। आदमी को देखते ही पहचान जाता हूँ कि सच्चाई क्या है। इससे मुझे न्याय करने में सुविधा होती है और यही मैंने आपके केस में किया है, अब तो आ जाइए।" उसने दूसरी ओर का दरवाजा खोल दिया।

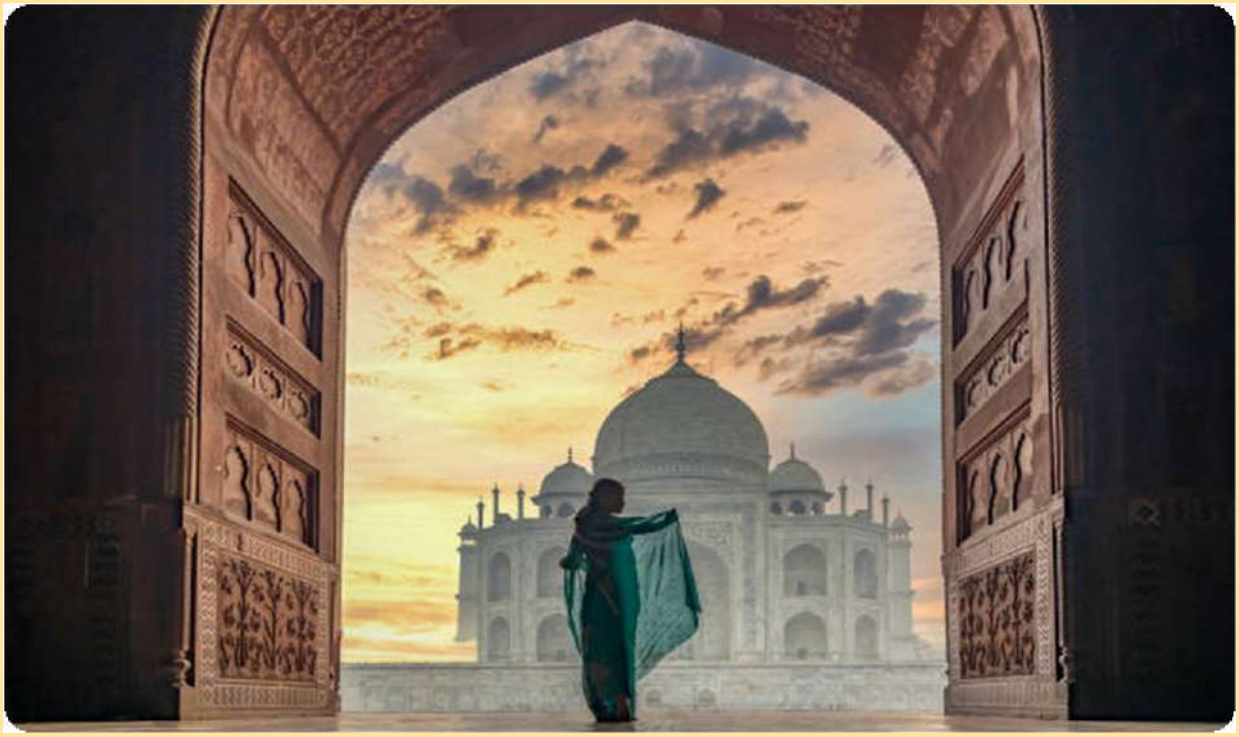

गीत

'लाश काँधे पर लिए कब तक

आज आँखें मूँद ली,

कल कर मलोगे ।

लाश काँधे पर लिए,

कब तक चलोगे ।

है नहीं कुछ शेष

इस बेजान तन में

व्यर्थ है अब देर

करना भी दफ़न में

जब्त कर गम रात दिन,

खुद को छलोगे ।

बुझ गया वह दीप

जिससे रौशनी थी

आस की जगमग

दमकती चाँदनी थी

तम घिरा है अब, कहाँ

तक तुम जलोगे ।

भोर आयेगा नया

सूरज उठाए,

आज चाहे घेर ले

तम या सताए ।

बैठ फिर आराम से,

पंखा झलोगे ।

रचनाकार

अशोक रक्ताले 'फणीन्द्र'

मां पन्ना धाय का त्याग

चित्तौड़ के महाराणा संग्राम सिंह की वीरता प्रसिद्ध थी! उनके स्वर्गवासी होने पर चित्तौड़ की गद्दी पर राणा विक्रमादित्य बैठे, किंतु वे शासन करने की योग्यता नहीं रखते थे! उनमें न बुद्धि थी और न हीं वीरता! इसलिए चित्तौड़ के सामंतो और मंत्रियों ने सलाह करके उनको गद्दी से उतार दिया तथा महाराणा संग्राम सिंह के छोटे कुमार उदय सिंह को गद्दी पर बिठाया!

उस समय उदय सिंह की अवस्था केवल 6 वर्ष की थी! उनकी माता रानी कर्णावती का स्वर्गवास हो चुका था! जिसके कारण पन्ना नाम की एक धाय उनका लालन -पालन करती थी! राज्य का संचालन दासी पुत्र बनवीर करता था! उसे सभी की सलाह से उदय सिंह का संरक्षक नियुक्त किया गया था!

बनवीर के मन में राज्य कर लोभ आया! उसने सोचा कि यदि विक्रमादित्य और उदय सिंह को मार दिया जाए तो सदा के लिए वह राजा बन सकेगा! सेना और राज्य का संचालन उसके हाथ में था ही! एक दिन रात में बनवीर नंगी तलवार लेकर राजभवन में गया और उसने सोते हुए राजकुमार विक्रमादित्य का सिर काट दिया!

झूठी पत्तल उठाने वाले एक बारी ने बनवीर को विक्रमादित्य की हत्या करते देख लिया! वह ईमानदार

और स्वाभिमान भक्त बड़ी शीघ्रता से पन्ना के पास आया और उसने कहा –

"धायमाँ बनवीर राणा उदय सिंह की हत्या करने शीघ्र ही यहां आएगा! कोई उपाय करके बालक राणा के प्राण बचाओ!"

पन्नाधाय अकेली बनवीर को कैसे रोक सकती थी! उसके पास कोई उपाय सोचने का भी समय नहीं था! लेकिन उसने एक उपाय सोच निकाला! उदय सिंह उस समय सो रहे थे! उनको उठाकर पन्ना ने एक टोकरी में रख दिया और टोकरी पत्तल से ढक कर उस बारी को देकर कहा –

"इसे लेकर तुम यहां से चले जाओ! वीरा नदी के किनारे मेरा रास्ता देखना!"

3

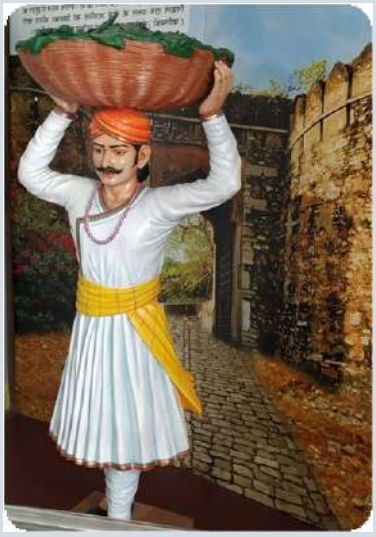

उदय सिंह को छिपाकर हटा देने से भी काम चलता नहीं था! बनवीर को पता लग जाए कि उदय सिंह को छुपा कर भेजा गया है तो वह घुड़सवार भेजकर उन्हें अवश्य पकड़ लेगा! **पन्ना ने एक दूसरा उपाय खोज निकाला!** उसको भी एक पुत्र था! जिसका नाम **चंदन** था जोकि अभी 6 वर्ष का था! उसने अपने पुत्र को उदय सिंह के पलंग पर सुलाकर रेशमी चद्दर उड़ा दी! और स्वयं एक और बैठ गई! जब बनवीर रक्त से सनी तलवार लिए वहां आया और पूछने लगा –

उदय सिंह कहां है?

तब धाय माँ ने बिना एक शब्द बोले उंगली से अपने छोटे लड़के की ओर संकेत कर दिया! हत्यारी बनवीर ने उसके निरपराध बालक के तलवार के एक हाथ से दो टुकड़े कर दिए और वहां से चला गया!

अपने स्वामी की रक्षा के लिए अपने पुत्र का बलिदान करके विचारी पन्ना रो भी नहीं सकती थी! उसे झटपट वहाँ से नदी किनारे जाना था, जहां बारी उदय सिंह को लिए उसका रास्ता देख रहा था! पन्ना ने अपने पुत्र की लाश ले जाकर नदी में डाल दी और उदय सिंह को लेकर मेवाड़ से चली गई! उसे अनेक स्थानो पर भटकना पड़ा! अंत में देवरा के सामंत आकाशाह ने उसे अपने यहां आश्रय दिया!

अंत में बनवीर को अपने पाप का दंड मिला! बड़े होने पर राणा उदय सिंह चित्तौड़ गद्दी पर बैठे! पन्नाधाय उस समय जीवित थी! राणा उदयसिंह माता के समान उसका सम्मान करते थे! स्वामी के लिए अपने पुत्र तक का बलिदान करने वाली पन्ना माई धन्य है!आज इतिहास में स्वामी भक्ति के कारण माँ पन्ना धाय का नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित है!

5

ममता का गला घोंट कर,स्वामी भक्ति को जिसने जिन्दा रखा,

बेटे से भी पहले सिंहासन को सुरक्षित रखा,

मेवाड़ी शान में चार चाँद लगाने वाली,

ऐसी त्यागमयी, स्वामिभक्ति माँ

पन्ना को प्रणाम है!

हिन्दू ह्रदय सम्राट
महाराजा सूरजमल

'नहीं जाटनी ने सही व्यर्थ प्रसव की पीर,

जन्मा उसके गर्भ से सूरजमल सा वीर"!

झुके जिसके आगे नवाब, मुगलिया सल्तनत सारी,

जिसके आगे नतमस्तक थी रजपूती तलवारी,

जिससे रण में भय खाती थी दुश्मन की दमदारी,

ऐसा निर्भीक अजय योद्धा था, हिन्दू ह्रदय सम्राट

सूरजमल रणधारी!

राजा सूरजमल

सुयोग्य शासक था। उसने ब्रज में एक स्वतंत्र हिन्दू राज्य को बना इतिहास में गौरव प्राप्त किया।

इतिहास के एकमात्र जाट महाराजा सूरजमल ऐसे शासक थे जिन्होंने जिस दौर में राजपूत राजा मुगलों से अपनी जागीरें बचा नहीं पा रहे थे! उस दौर में वे बाहुबली के समान अकेले मुगलों से लोहा ले रहे थे,सूरजमल को स्वतंत्र हिन्दू राज्य बनाने के लिए भी जाना जाता है!

सूरजमल की बुद्धि स्थिर थी, और उनका दृष्टि क्षेत्र सुस्पष्ट था, वे एक किसान की पोशाक पहनते थे और केवल बृजभाषा ही बोलते थे, तथापि वे जाट जाति के प्लेटो कहा जाता है !

महाराजा सूरजमल का **जन्म 13 फरवरी 1707** में हुआ! यह इतिहास की वही तारीख है, जिस दिन मुग़ल शाषक औरंगजेब की मृत्यु हुई थी! मुगलों के आक्रमण का मुंह तोड़ जवाब देने में उत्तर भारत में जिन राजाओं का विशेष स्थान रहा है, उनमें राजा सूरजमल का नाम बड़े ही गौरव के साथ लिया जाता है! उनके जन्म को लेकर यह लोकगीत काफ़ी प्रचलित है!

'आखा' गढ गोमुखी बाजी,
माँ भई देख मुख राजी.
धन्य धन्य गंगिया माजी,
जिन जायो सूरज मल गाजी.
भइयन को राख्यो राजी,
चाकी चहुं दिस नौबत बाजी

उनके पिता का नाम राजा बदनसिंह तथा माता का नाम महारानी देवकी था! उन्होंने छोटी सी उम्र में ही महाराजा बदन सिंह से युद्ध के गुर सीखे!

राजा सूरज मल में वीरता, धीरता, गम्भीरता, उदारता, सतर्कता, दूरदर्शिता, सूझबूझ, चातुर्य और राजमर्मज्ञता जैसे विरोचित गुण विद्यमान थे । मेल-मिलाप और सह-अस्तित्व तथा समावेशी सोच को वे महत्व देते थे ! उनका व्यक्तित्व सच्ची भारतीयता से ओतप्रोत था । एक आधुनिक इतिहासकार ने उनकी तुलना ओडिसस से की है।

राजा सूरजमल एक ऐसे राजा थे जिन्होंने बहुत कम सेना होते हुए भी निरंतर जंग लड़ लड़ के एक विशाल साम्राज्य बसा लिया था।

महाराजा सूरजमल का जीवन अनेकानेक विजयों का धनी है ! उनके जीवन की कुछ मुख्य विजयों के विषय में यहाँ प्रकाश डाला गया है !

1. मुगलों औऱ जाटों में दुश्मनी का कारण –

साल 1659 में दिल्ली की राजगद्दी पर आसीन मुगल शासक औरंगजेब थे जो कि एक कट्टर मुगल शासक था ! उसने किसानों पर कर का ऐलान किया ! एक विशेष प्रकार का कर ताकि उसकी संपत्ति बढ़ सके। उसके आदेश के बाद मुगलों के अधीन समस्त इलाकों के किसानों से जबरन कर वसूला जाने लगा !

चाहे किसान खेत बोए या ना बोए उन्हें एक तय कर देना पड़ेगा ! उसके इस जुल्म से तंग आकर किसानों ने विद्रोह कर दिया। कुछ इलाकों में किसान मुगल

फौज के खौफ से डर कर पीछे हट गए और कुछ इलाकों के द्वारा किसानों के विद्रोह को दबा दिया गया !

लेकिन इन सब के अलावा भारत के ब्रज इलाके में एक ऐसी वीर जाट जाति थी जिसने ना केवल कर देने से इंकार किया बल्कि कर वसूलने आए मुगलों को मौत के घाट उतार दिया। इस वीर जाट जाति का सरदार था तिलपत का जमींदार गोकुला जाट।

औरंगजेब ने विद्रोह को कुचलने के लिए एक सेना की विशेष टुकड़ी भेजी मगर वो भी गोकुला जाट को कैद नहीं कर पाए। इस घटना के बाद भी औरंगजेब ने एक के बाद एक तीन बार ब्रज में इस जाट समुदाय पर हमला किया। लेकिन हर बार वो नाकाम रहे।

जाटों की वीरता देख दिल्ली के शाही तख्त पर बैठा औरंगजेब रुक नहीं पाया और उसने एक विशाल सेना के साथ तिलपत के मैदानों में वीर समुदाय को घेर लिया। इसके पश्चात् 1669 में विशाल सेना को सामने देख कर भी जाट पीछे हटने के बजाय युद्ध के लिए कूद पड़े।

यह युद्ध कुछ देर चला और विशाल सेना ने जाटों के विद्रोह को कुचल दिया ! गोकुला जाट युद्ध में मारे गए और उनके कुछ साथी कैद करके आगरा भेज दिए गए। आगरा में औरंगजेब ने अपनी क्रूरता की हदे पार करते हुए सभी कैदियों को चौराहे पर टुकड़ों में काट दिया।

उसके इस घटिया काम से समस्त ब्रज और उसके आसपास के इलाकों के किसान आग बबूला हो गए ! उन्होंने तिलपत में ही सामूहिक बैठक की और गोकुला जाट के बेटे राजा सिनसिनवार को तिल्पत का नया सरदार घोषित कर दिया। सरदार पद प्राप्त करते ही राजा ने पहली कसम मुगलों से बदले की खाई।कुछ समय में नए सरदार ने एक दमदार सेना तैयार कर ली और सेना तैयार होते ही उन्होंने

आगरा के पास बने सिकंदरा पर आक्रमण कर दिया। सिकंदरा में मौजूद अकबर के मकबरे में तोड़फोड़ करके और आगरा से कुछ धन लूट उन्होंने अपने सरदार की मौत का बदला लिया। यही से जाट और मुगलों के बीच दुश्मनी की शुरुवात हुई जो कभी ख़त्म नहीं हुई।

मुगलों को मुंह तोड़ जवाब देने के बाद ब्रज के इलाके में जाटों का नाम प्रसिद्ध हो गया, उनके किस्से लोगो की दैनिक वार्तालाप के हिस्से बन गए। कुछ समय बाद सिनसिनवार के बेटे बदन सिंह ने वीर जाति के सरदार का पद संभाला और अपने पूर्वजों कि तरह मुगलों से जंग जारी रखने का आदेश दिया।

इस प्रकार आगरा के आसपास बने कुछ मुगलखानो पर आक्रमण किया और उस इलाके को अपने कब्जे में ले कर एक पृथक नगर की नींव रख दी जिसे बाद में भरतपुर के नाम से जाना जाने लगा।

2. भरतपुर किले का निर्माण

1755 तक राजा बदन सिंह का राज ब्रज के भरतपुर में रहा ! अपने शासन के दौरान उन्होंने जाट साम्राज्य की सीमा विस्तार के लिए मुगलों से कई लड़ाइयां लड़ी। मगर कहीं ना कहीं उनकी राजनीति में वो बात नहीं थी के वो जीते हुए इलाकों को मुगलों से बचा के रख सकते।

वो युद्ध लड़ते और कुछ समय तक इलाके पर कब्जा रखते और फिर मुगल वापस जीत लेते क्यूंकि उनकी सेना अभी भी कमजोर थी ! मुगलों को उनकी असली हैसियत दिखाई बदन सिंह ने बेटे महाराजा सूरजमल ने।

उनका बचपन भी मुगलों से लडने में गुजरा था। लेकिन उनको फैसले लेने का अधिकार नहीं था ।

बदन सिंह की मृत्यु के बाद महाराजा सूरजमल ने भरतपुर की गद्दी संभाली और सबसे पहला काम अपने लिए एक मजबूत सुरक्षित ठिकाना बनाने का किया। महाराजा सूरजमल बचपन से ही गुस्सैल प्रवृति के थे ! कम उम्र में ही उन्होंने अपने पिता के आदेश के बाद मेवात के मेवो पर आक्रमण कर कुछ समय के लिए उनसे मेवात छीन लिया था।

मेवात के अलावा सूरजमल ने राजकुमार रहते हुए डीग के सोंगरियो पे हमला करके डीग के एक बड़े हिस्से को अपने कब्जे में ले लिया था। ये युद्ध उन्होंने 1732 में लड़ा गया यह युद्ध एक विशाल युद्ध था जिसमें काफी जान माल का नुक़सान हुआ था। इसी युद्ध के बाद सूरजमल ने भरतपुर में लोहागढ़ किले का निर्माण करवाया।

भरतपुर में स्थित यह किला **लोहागढ़ किला** (Iron fort) के नाम से जाना जाता है। यह देश का एकमात्र किला है, जो विभिन्न आक्रमणों के बावजूद हमेशा अजेय व अभेद्य रहा।

जिसे अंग्रेज 13 बार आक्रमण करके भी भेद नहीं पाए ! मिट्टी के बने इस किले की दीवारें इतनी मोटी बनाई गयी थी कि तोप के मोटे-मोटे गोले भी इन्हें कभी पार नहीं कर पाए, यह देश का एकमात्र किला है, जो हमेशा अभेद रहा !

भरतपुर का लोहागढ़ किला

अजेय व अभेद्य

3. जयपुर रियासत से सम्बन्ध

राजा सूरजमल का जयपुर रियासत के महाराजा जयसिंह से अच्छा रिश्ता थ ! जयसिंह की मृत्यु के बाद उसके बेटों ईश्वरी सिंह और माधोसिंह में रियासत के वारिश बनने को लेकर झगड़ा शुरु हो गया ! सूरजमल बड़े पुत्र ईश्वरी सिंह को रियासत का अगला वारिस बनाना चाहते थे, जबकि उदयपुर रियासत के महाराणा जगतसिंह छोटे पुत्र माधोसिंह को राजा बनाने के पक्ष में थे ! इस मतभेद की स्थिति में गद्दी को लेकर लड़ाई शुरु हो गई, मार्च 1747 में हुए संघर्ष में ईश्वरी सिंह की जीत हुई ! लड़ाई यहां पूरी तरह खत्म नहीं हुई ! माधोसिंह मराठों, राठोड़ों और उदयपुर के सिसोदिया राजाओं के साथ मिलकर वापस रणभूमि में आ

गया ! ऐसे माहौल में राजा सूरजमल अपने 10,000 सैनिकों को लेकर रणभूमि में ईश्वरी सिंह का साथ देने पहुंच गये!

इस युद्ध में ईश्वरी सिंह को विजय प्राप्त हुई और उन्हें जयपुर का राजपाठ मिल गया ! इस घटना के बाद महाराजा सूरजमल का डंका पूरे भारत देश में बजने लगा !

4. मराठी और जाट रियासत के बीच कुम्हेर का युद्ध

दिल्ली मे जाटो से हार कर गयासुद्दीन मराठी सेना की मदद से, सूरजमल से हार का बदला लेने के लिए भरतपुर की तरफ पहुंच गया। भरतपुर की सेना से उसका मुकाबला हुआ कुम्हेर के किले में ! उन्होंने कुम्हेर के किले को घेर लिया।

महाराजा सूरजमल उस समय भरतपुर से बाहर थे किसी मुहिम पर ! जब उन्हें गयासुद्दीन और मराठो की इस हरकत का पता चला वो तुरंत कुम्हेर की और लौट गए। उधर कुम्हेर में दुर्ग को घिरा देख वहां के सेनापति ने योजना बनाई के इनको जवाब दिया जाए अगर उन्हें पता चल गया कि दुर्ग में सेना कम है तो दुर्ग को कोई नहीं बचा पाएगा। राजा सूरजमल जब तक कुम्हेर पहुंचते तब तक उनकी रानी हंसिया ने मल्हार राओ की पत्नी रानी जयाजी को पत्र लिख उनके द्वारा उनके पुत्र को मारे जाने के हादसे की माफी मांग ली और तुरंत शांति वार्ता के लिए मना लिया।

ये सब घटना उत्तर भारत में हो रही थी वहीं दक्षिण भारत में मराठे अपना एक विशाल साम्राज्य बसा चुके थे। उनके द्वारा चलाई गई स्वराज की आंधी अटक से कटक तक भगवा लहरा चुकी थी ! पूरे दक्खन पर उनका राज था। दिल्ली में उस वक्त आलमगीर द्वितीय गद्दी पर बैठा था ! दिल्ली अब वो दिल्ली नहीं रही जिसके दीवाने हर सुल्तान होते थे।

दिल्ली एक जर्जर रियासत थी लेकिन फिर भी उनको अपना बचा खुचा नाम मिटने का डर था ! सबसे बड़ा डर था मराठो का, इसलिए वो समय पर मराठो को कर देते थे अपनी सुरक्षा के लिए।

5. दिल्ली पर आक्रमण

सराय में हार के बाद अहमद शाह ने अपने वजीर सैफुदिन को पद से हटा दिया और उसे देश निकाला दे दिया ! अपने बादशाह के इस धोखे से वजीर उसका दुश्मन बन गया और उसे सबक सीखाने के लिए भरतपुर कूच कर गया। महाराजा सूरजमल और वजीर में पहले से अच्छे संबंध थे।

उन संबंधों का वास्ता देकर वजीर ने महाराजा सूरजमल को दिल्ली पर हमला करने के लिए राजी कर लिया ! मई 1553 में महाराजा सूरजमल ने दिल्ली पर हमला कर दिया। दिल्ली में महाराजा के सामने था वहां नवाब गयासुद्दीन जिसे जाटों ने ऐसा घेरा के वो चंद घंटो में युद्ध से भाग गया।

हमले में क्षतिग्रस्त दिल्ली

लाल किले का द्वार

दिल्ली में जाट घुस चुके थे ! सल्तनत से मुगलिया जर्जर हालत में किले के एक कमरे में कैद हो गई यानी बादशाह जाटों के दिल्ली में घुसने से डर कर एक कमरे में कैद हो गया। जाटों ने पुरानी दिल्ली में मई से लेकर जून तक दिल्ली में डेरा डाले रखा और भयंकर लूटपाट की। लूटपाट केवल मुगलों के खजाने की हुई ।

कमजोर और भयभीत अहमद शाह आखिर में महाराजा सूरजमल के सामने झुक गया और शांति संधि का प्रस्ताव रख दिया। महाराजा सूरजमल ने शर्त रखी कि उसके मित्र सैफुद्दीन की वापस से उसकी जागीर लौटाई जाए ! अहमदशाह ने शर्त मान ली और उसे जिंदा छोड़ दिया गया।

जाटों से हार कर ग्यासुद्दीन मराठी सरहद में घुस गया और मल्हारराव होलकर को उकसा कर महाराजा सूरजमल के साथ युद्ध करने निकल पड़ा।

लेकिन महाराजा सूरजमल कहीं ना कहीं नजीब की हरकत से बहुत ज्यादा गुस्से में थे ! चारो तरफ से बंद चारदीवारी में कैद दिल्ली में वो केवल 30 घुडस्वारो के साथ दरवाजा तोड़ कर घुस गए। वहां मौजूद विशाल सेना महज 30 सैनिकों के साथ आए महाराजा सूरजमल पर टूट पड़ी।

उसी जगह युद्ध करते हुए महाराजा सूरजमल की मौत हो गई ! इतिहासकार उनकी मौत से जुड़े अलग अलग मत देते है मगर जो भी था उस दिन भारत के एक वीर हमेशा के लिए चला गया। भरतपुर रियासत को अब महराजा जवाहर सिंह ने संभाला और अपने पिता के नियमो को आगे तक चलाया।

महाराजा सूरजमल की शौर्य गाथा के वर्णन से आज हमें अपने पूर्वजों की सहेजी गई रियासत का बोध होता है ! उनके जीवन का प्रति क्षण शिक्षा प्रद है जो हमारे लिए एक सीख देता है !

ऐतिहासिक स्थल एक नजर

'चित्तौड़गढ़ दुर्ग'

चित्तौड़गढ़ दुर्ग का परिचय: -

चित्तौड़गढ़ का दुर्ग उत्तर भारत के ऐतिहासिक स्थलों में सबसे महत्वपूर्ण किलो में से एक है! जो आज भी अपनी वीरता और बलिदान की कहानियां संसार को बयां कर रहा है!

चित्तौड़गढ़ किले का निर्माण मौर्य शासकों द्वारा सातवीं शताब्दी ई. में किया गया!

अपनी आकर्षण और भव्य सुंदरता के साथ- साथ, यह आज भी राजपूती संस्कृति एवं मूल्यों को प्रदर्शित करता है!

यह दुर्ग लगभग 700 एकड़ भूमि में फैला हुआ है!

ब्रिटिश पुरातत्व दूत **सर ह्यूज केशर** ने चित्तौड़गढ़ दुर्ग के विषय में कहा है कि –

"चित्तौड़ के सुनसान किले में विचरण करते समय मुझे ऐसा लगा मानो किसी भीमकाय जहाज की छत पर चल रहा हूं!"

यह दुर्ग इतिहास की खूनी युद्धों का आज भी गवाही दे रहा है, जो कहानी रक्तरंजित लिखी गई है!

चित्तौड़ के दुर्ग को 2013 में यूनेस्को विश्व विरासत स्थल घोषित किया गया!

चित्तौड़गढ़ दुर्ग को राजस्थान का गौरव, गढ़ों का सिरमौर , चित्तौड़ आदि नामों से विख्यात है!

यह भारत के सबसे बड़े किलो में से एक हैं!

चित्तौड़गढ़ दुर्ग राज्य का सबसे प्राचीनतम दुर्ग है इस दुर्ग के बारे में कहावत है –

चित्तौड़गढ़ किले में देखने योग्य स्थल:-

चित्तौड़गढ़ दुर्ग में पर्यटकों के मन को लुभाने वाले विजय स्तंभ, पद्मिनी महल, कुंभा महल, गोरा -बादल महल, जयमल –फत्ता (पता) हबेलिया, कालिका माता मंदिर, सूरजकुंड, नवलखा भंडार, श्रंगार चवरी जैन मंदिर, भामाशाह हवेली, फतेह प्रकाश महल, जो कि अब एक संग्रहालय है तथा चित्तौड़गढ़ किले का साउंड एवं लाइट शो प्रमुख हैं!

विजय स्तंभ: -

विजय स्तंभ का निर्माण महाराणा कुंभा द्वारा 1440 ई. से 1448 ई. में मालवा विजय के उपलक्ष में करवाया! इसे दुर्ग के भीतर 9 मंजिला भव्य इमारत के रूप में बनाया गया है! विजय स्तंभ को कर्नल जेम्स टॉड ने **'रोम के टार्जन'** की उपमा दी है! तथा इसे भारतीय **मूर्तिकला का विश्वकोश** भी कहा गया है!

रानी पद्मिनी महल:-

यह महल चित्तौड़गढ़ दुर्ग में दक्षिण भाग में स्थित है इसको सफेद संगमरमर पत्थर से निर्मित किया गया है तथा यह तीन मंजिला इमारत है! यहीं पर ही अलाउद्दीन खिलजी ने रानी पद्मिनी को एक झलक देखा ! यह मेल एक सुंदर जलाशय के मध्य स्थित हैं! इसके दक्षिण पूर्व में गोरा बादल महल है!

भामाशाह की हवेली: -

यह हवेली प्रसिद्ध **दानवीर भामाशाह** की याद दिलाती है जिन्होंने मेवाड़ के रक्षक महाराणा प्रताप को मातृभूमि की रक्षा के लिए धन की आवश्यकता पड़ी! तब भामाशाह ने अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना सबकुछ महाराणा प्रताप को दान कर दिया!

कुंभा महल: -

यह चित्तौड़गढ़ दुर्ग का सबसे पुराना स्मारक है आज खंडार अवस्था में विजय स्तंभ के प्रवेश द्वार की ओर स्थित है! इस महल का प्रवेश द्वार सूरजपोल है! कृष्ण भक्त मीरा बाई भी इसी महल में रहती थी! तथा यह वही स्थान हैं जहां रानी पद्मिनी तथा अन्य महिलाओं ने मिलकर सामूहिक जोहर किया था!

चित्तौड़गढ़ दुर्ग का साउंड एवं लाइट शो: -

चित्तौड़गढ़ दुर्ग के इतिहास एवं घटित घटनाओं को रूबरू कराने का एक तरीका है! जिससे पर्यटक को इतिहास से परिचित हो सकें! तथा यह शो शाम को 7:00 बजे प्रारंभ होता हैं! सबसे ज्यादा पर्यटक इसी शो से आकर्षित होते हैं!

चित्तौड़गढ़ दुर्ग में तीन जोहर व साके हुऐ है:-

पहला साका:-1303 ईस्वी में अलाउद्दीन खिलजी ने सुंदरी रानी पद्मिनी को पाने के लिये चित्तौड़ पर आक्रमण कर दिया उस समय राणा रतन सिंह यहां के शासक थे! इस युद्ध में अलाउद्दीन खिलजी विजयी हुआ! इस दुर्ग को जीतकर अलाउद्दीन खिलजी ने इसे अपने पुत्र खिज्र खां को सौंप दिया! खिज्र खा ने वापसी पर चित्तौड़ का राजकाज कान्हा देव के भाई मालदेव को सौंप दिया! यह सारा वृतांत अमीर खुसरो ने अपनी कृति 'तारीख अलाई' में लिखा है! क्योंकि उस

समय अलाउद्दीन का दरबारी कवि और लेखक अमीर खुसरो चित्तौड़गढ़ के इस अभियान में अलाउद्दीन खिलजी के साथ था!

इस प्रथम साके में राणा रतन सिंह के साथ- साथ सेनानायक गोरा- बादल भी शहीद हुए! तथा महारानी पद्मिनी ने सभी महिलाओं के साथ जोहर किया!

दूसरा साका :- बप्पा रावल के वंशज राजा हमीर ने पुन: मालदेव से दुर्ग

जीत लिया! सुल्तान बहादुर शाह ने चित्तौड़ पर 2 बार आक्रमण किए! सन 1534ई. मे उसने एक विशाल सेना के साथ चित्तौड़ पर आक्रमण कर दिया उस समय यहां की राजमाता कर्मावती ने राखी भेज कर मुग़ल शासक हुमायूं से सहायता मांगी थी! युद्ध में मेवाड़ की विजय की कोई आशा न देख अल्पवय महाराणा विक्रमादित्य को छोटे भाई उदय सिंह के साथ उसके ननिहाल बूंदी भेज दिया गया तथा देवलिया प्रतापगढ़ के रावत बाघसिंह के नेतृत्व में मेवाड़ के वीर योद्धाओं ने आक्रांताओ से लोहा लिया! अंत में राजमाता कर्मावती तथा अन्य वीरांगनाओं ने जौहर की ज्वाला प्रज्वलित कर अपने प्राणों की आहुति दे दी! इतिहास में यह दूसरा साका कहलाया!

तीसरा साका :- सन 1567 में मेवाड़ का तीसरा साका हुआ जिसमें मुगल शासक अकबर ने एक विशाल सेना के साथ चित्तौड़ पर आक्रमण कर दिया उस समय महाराणा उदय सिंह यहां के शासक थे! यह साका जयमल राठौड़ और पता सिसोदिया के पराक्रम और बलिदान के लिए प्रसिद्ध है!

चित्तौड़गढ़ दुर्ग के बारे में कुछ खास बातें :-

- इस दुर्ग के अंदर कृषि की जाती है!
- पौराणिक मान्यता के अनुसार महाभारत काल के भीम ने अपने घुटने के बल से यहाँ पानी निकाला था! जिसे आज भीमकाय सरोवर के नाम से जानते है!

- यह दुर्ग सबसे बड़ा लिविंग फोर्ट है!
- इस दुर्ग को प्राचीन किलो का सिरमोर कहाँ जाता है!
- सूरजपोल दुर्ग का सबसे प्राचीन दरवाजा है!
- कीर्ति स्तंभ को पौराणिक हिंदू मूर्तिकला का अनमोल खजाना कहा जाता है!

साहित्य सम्बन्धित पुरस्कार

साहित्य अकादमी का उदघाटन करते हुए एस. राधाकृष्णन

प्रश्न 1. साहित्य अकादमी पुरस्कार की शुरुआत कब से हुई ?

उत्तर - साहित्य अकादमी पुरस्कार भारत सरकार द्वारा दिया जाने वाला ज्ञान पीठ पुरस्कार के बाद दूसरे स्थान पर साहित्यिक सम्मान है ! जिसकी स्थापना 12 मार्च 1954 में की गई ! 1955 से प्रतिवर्ष भारतीय भाषाओं की श्रेष्ठ कृतियों को नई दिल्ली द्वारा नेशनल अकादमी ऑफ़ लेटर्स अर्थात साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया जाता है !

प्रश्न 2. साहित्य अकादमी पुरस्कार कौनसी भाषाओं की रचनाओं पर दिया जाता है ?

उत्तर – यह पुरस्कार संविधान की आँठवीं अनुसूची में उल्लिखित 22 भाषाओं के अलावा अंग्रेजी एवं राजस्थानी भाषा की रचनाओं पर भी दिया जाता है !

प्रश्न 3 पहली बार साहित्य अकादमी पुरस्कार पहली बार कब दिया गया एवं उस समय इसकी पुरस्कार राशि कितनी थी ?

उत्तर – यह पुरस्कार पहली बार 1955 में दिया गया व उस समय पुरस्कार राशि 5000/- रूपये थी !

प्रश्न 4 वर्तमान में साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता को कितनी राशि पुरस्कार स्वरूप दी जाती है ?

उत्तर – पुरस्कार राशि अब 1 लाख है साथ ही एक प्रशस्ति पत्र व शाल दिया जाता है !

प्रश्न 5 साहित्य अकादमी पुरस्कार के लिए विजेता चयन के क्या मानदंड निर्धारित किये गए हैं ?

उत्तर – 1. लेखक की राष्ट्रीयता भारतीय मूल की होनी चाहिए !

2. पुरस्कार के लिए पात्र रचना / पुस्तक का सम्बंधित भाषा औऱ साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान होना चाहिए !

3. ज़ब दो या दो से अधिक पुस्तकों के लिए समान योग्यता पाई जाती है तो पुरस्कार की घोषणा के लिए कुछ निश्चित मानदंडो जैसे साहित्य के क्षेत्र में योगदान, समाज में स्थिति औऱ प्रतिष्ठा को ध्यान में रखा जाता है !

प्रश्न 6 हिंदी भाषा में पहला साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त करने वाले रचनाकार कौन हैं ?

उत्तर – 1955 में यह पुरस्कार माखन लाल चतुर्वेदी को उनकी रचना हिम तरीगनी काव्य के लिए प्रदान किया गया !

प्रश्न 7 हिंदी साहित्य अकादमी का 2020 का पुरस्कार किसे प्रदान किया गया ?

उत्तर – हिंदी साहित्य अकादमी 2920 लेखिका अनामिका को प्रदान किया गया है ! यह पुरस्कार उन्हें टोकरी में दिंगत नामक काव्य संग्रह के लिए प्राप्त हुआ!

प्रश्न 8. साहित्य अकादमी के युवा पुरस्कार के विषय में आप क्या जानते हैं ?

यह पुरस्कार 35 वर्ष से कम आयु के लेखकों को उनकी प्रकाशित पुस्तक के चयन पर दिया जाता है !, पुरस्कार राशि व स्मृति चिन्ह भेंट स्वरुप दिए जाते हैं !

साहित्य अकादमी द्वारा इस वर्ष के साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार 2020 वितरित किए गए. इस बार युवा पुरस्कारों के लिए विभिन्न भाषाओं के 23 युवा साहित्यकारों को प्रदान किया गया. बेंगलुरु के भारतीय विद्या भवन में ये पुरस्कार प्रदान किए गए|

साहित्य अकादमी के अध्यक्ष तथा प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. चंद्रशेखर कांबर ने चयनित युवा साहित्यकारों को सम्मानित कियाण् इस मौके पर उन्होंने कहा कि ये पुरस्कार विभिन्न भारतीय भाषाओं में लिखे जा रहे साहित्य और साहित्यकारों को प्रोत्साहित करने का काम करते हैं |

हिंदी साहित्य के लिए युवा लेखक अंकित नरवाल (Ankit Narwal) को उनकी

पुस्तक "यू आर अनन्तमूर्ति प्रतिरोध का विकल्प" के लिए साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार 2020 प्रदान किया गया. अंकित पंजाब यूनिवर्सिटी में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं|

प्रश्न 9 साहित्य अकादमी के पहले एवं वर्तमान में अध्यक्ष के बारे में बताइये ?

उत्तर – साहित्य अकादमी के पहले अध्यक्ष जवाहर लाल नेहरू थे ! वर्तमान में प्रो. चन्द्र शेखर कंबार को 2018-22 तक साहित्य अकादमी का अध्यक्ष चुना गया है !'

साक्षात्कार

हिंदी साहित्य के क्षेत्र में – विशेष

डॉ. बोहती ढ़ांडा

सम्पादक

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी एवं सामाजिक विज्ञान

शोध पत्रिका

आज हम आपका परिचय करवा रहें हैं अंतर्राष्ट्रीय हिंदी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका की सम्पादक डॉ बोहती डांडा जी से ! साधारण हिन्दू परिवार में, पूर्णतः ग्रामीण माहौल में इनका बचपन बीता ! परिवार में सभी खेती के कार्य से जुड़े थे ! इनका गांव हरियाणा में स्थित है – तहारी ! इनकी प्रारंभिक शिक्षा भी गांव से ही हुई ! अपने गांव में इन्होने सबसे अधिक शिक्षा प्राप्त की है संघर्षों के चलते इनकी शिक्षा की यात्रा किस प्रकार पीएचडी करने तक पहुँची औऱ कैसे ये अंतर्राष्ट्रीय जर्नल के सम्पादन कार्य द्वारा साहित्य जगत को अपनी सेवाएं दे रहीं हैं -

आइये इनसे ही जानते हैं -

प्रश्न 1. मैडम, ग्रामीण इलाकों में लड़कियों की शिक्षा को लेकर लोगों के नकारात्मक विचार होते हैं?

हाँ बी ए में मेरे को एडमिशन नहीं दिलवाते थे ! हाँ जी क्योंकि घर बहुत दूर था, 30-35 किलोमीटर तो घर वाले allowed नहीं कर रहें थे कि ऐसे अकेले कैसे जाओगे ! बहुत मैंने लड़ाई की घर वालों से झगड़ा किया, उसके बाद घर वालों ने एडमिशन दिलवाया क्योंकि मेरा sports में बहुत interest था, मैं sports में बहुत ज्यादा आगे रही हूँ !'

कॉलेज के लिए बहुत धक्के से एडमिशन मिला, फिर कॉलेज जाने लगी !' अपने गांव में मैं अकेली लड़की जाती थी, आस पास से भी ! ग्रेजुएशन किया ! ग्रेजुएशन करने के बाद घर वालों ने मना कर दिया कि आपको एम ए नहीं कराया जायेगा !" तब फिर एम ए के लिए मैंने प्राइवेट apply कर दिया !'तब फिर इंगेजमेंट हो गई ! ससुराल वालों ने बोल दिया कि स्पोर्ट्स लाइन में नहीं जाने दिया जायेगा !" एक साल एम ए का हो गया फिर घर वालों ने बोला बी एड में एडमिशन ले लो ! मैंने test दिया मेरा बी एड में एडमिशन हो गया ! एम ए मैंने एक साल प्राइवेट कर लिया. उसके बाद बी एड किया !

फिर एम फिल के फॉर्म निकलें हुए थे correspondence से ! एडमिशन ले लिया ! एम ए एजुकेशन से भी किया ! अंकल ने तब पी एच डी करने के लिए प्रेरणा दी ! पी एच डी में एडमिशन ले लिया !

शुरू होते टाइम दिक्कत आती थी !, कोई co-operate नहीं करता था उस समय घर वालों ने मेरे मम्मी पापा ने मुझे बहुत co-operate किया !

प्रश्न 2. आपका पी एच डी का विषय कौनसा था मैडम ?

मेरा पी एच डी का विषय था -नरेश मेहता के उपन्यासों में सामाजिक चेतना !

प्रश्न 3. पी एच डी आपने कहाँ से की तथा क्या अनुभव रहे आपके ?

मैंने दक्षिण भारतीय हिंदी प्रचार सभा चेन्नई से पीएचडी रजिस्ट्रेशन किया है !,

एडमिशन वहाँ लिया, काम यही से किया ! तब गाइड ले सकते थे जिनको 14 साल का गाइड का एक्सपीरियंस हो !

यहाँ सबने बहुत cooperate किया ! लेकिन लिखने का काम खुद किया !

मैं अपना पी एच डी का काम हरियाणा में ही करती थी, रजिस्ट्रेशन तो चेन्नई का था लेकिन घर पर संयुक्त परिवार होता था बहुत काम होता था !

प्रश्न 4. आप अपने जीवन के संघर्षो के बारे में बताइये ?

हाँ जी, कौन खुश हुआ ? कौन दुःखी ये सब चीज़ें बहुत matter करती हैँ औऱ उस वक़्त तो मुझे सभी की तरफ से पता नहीं कितना कुछ सुनना पड़ता था ! लेकिन मैं हमेशा यह सोचती कि जो पेड़ हैँ ना... पेड़ को देख कर चलती थी मैं क्योंकि पेड़ की चोटी तक पहुंचने के लिए हमें कितनी शाखाओं को पार करना पड़ता है ! कितना struggle करना पड़ता है !"

पेड़ पर चढ़ेंगे तो देखें कि रास्ते में कितनी बाधाएं आती हैँ, ये तो नहीं है कि हम सीधे ही पेड़ पर चढ़ जायेंगे उसके लिए भी सोचना पड़ता है कैसे चढ़ना है, कैसे काम होगा ? तो मैं ये सोच कर माइंड को उधर लगा लेती थी कि ये ही मेरे काम आएगा जो मैं कर रही हूँ अभी !

प्रश्न 5. इंटरनेशनल जर्नल के लिए आपका संपादक के पद को कब संभाला औऱ कैसे शुरुआत हुई ?

पी एच डी करने के बाद जॉब के लिए apply किया तो उसके क्राइटेरिया देखें ! इसमें पेपर पब्लिश की जरूरत होती है, book पब्लिश हो तो उसके भी marks मिलते हैँ ! सेमिनार attend करने के भी marks मिलते हैँ ! उस समय मेरे अंकल जिन्होंने मेरा एडमिशन करवाया था पी एच डी में, उन्होंने ही मुझे इंटरनेशनल जर्नल का सम्पादक बनाया ! उन्होंने ही मेरे नाम से यह जर्नल शुरू करवाया !

मेरे अंकल का नाम सुरेंद्र गुप्ता है ! इस जर्नल के डायरेक्टर भी हैं और कई जर्नल्स इनके under चलते हैं !"वे महाराजा अग्रसेन कॉलेज बिरादरी हरियाणा में associate prof. भी हैं !

प्रश्न 6. अब तक कितने पेपर पब्लिश हो चुके हैं आपके ?

मेरी एक book भी पीएचडी के विषय पर 2014 में आ चुकी है !

अब तक 5 पेपर पब्लिश हो चुके हैं और इसके अलावा पीएचडी करते समय ही शब्द सरोकार नाम के नेशनल जर्नल में भी दो पेपर पब्लिश हो चुके हैं !

प्रश्न 7. आज युवाओं का लेखन के प्रति रुझान नहीं है ? क्या कारण हैं और आप कौनसे तरीके अपना रही हैं इसके लिए ?

मैं अभी जैसे बच्चों को कविता पढ़ाती हूँ final year और second year के बच्चों को ! कविताओं पर पहले बच्चों के views लेती हूँ कि तुम्हें इससे क्या सीखने को मिला फिर खुद बताती हूँ ! मैं हमेशा उनसे पूछती हूँ कि ये कविता, कहानी सब आपके पाठ्यक्रम में क्यों शामिल किये गए हैं ?

हम कोशिश तो करते हैं ऑनलाइन में क्या बताएं ! बच्चे ऑनलाइन class attend नहीं करते ! बहाना लगाते हैं, माता -पिता से झूठ बोलते हैं !

मैं अपनी तरफ से बहुत प्रयास करती हूँ, हमारे कॉलेज में निबंध, कविता, कहानी लेखन की प्रतियोगितायें होती हैं ! कुछ बच्चे जरूर आगे आते हैं !

लेकिन बच्चों का झुकाव विदेश जाने की ओर हैं ! मैं कविताओं के माध्यम से जैसे लोकतंत्र पर संकट और गुलाम बनाने वाले देश, इनसे बच्चों पर प्रभाव भी बहुत पड़ता है !,

प्रश्न 8. क्या आप कविताएं लिखते हैं मैडम ?

नहीं, केवल सामाजिक तौर पर जागरूकता लाने का प्रयास करती हूँ !

मैं तो यही मानती हूँ कि class के 80 बच्चों में से 10 भी जागरूक हों तो यह मेरी बहुत बड़ी achievement होगी !

बच्चों को सिखाती हूँ उनके साथ दोस्त की तरह रहकर, मैं प्रोफेसर हूँ ऐसा नहीं चलती ! मैंने देखा है कि बहुत क्षमता होने के बाद भी घर की समस्याओं के कारण बच्चे आगे नहीं बढ़ पाते ! मैं यही सोचती हूँ कि किसी एक बच्चे को भी बाहर निकाल सकूँ और वो एक भी एक को जागरूक कर दे तो हम पता नहीं कितनों को जागरूक कर देंगे !

प्रयास तो धीरे धीरे ही होंगे ! लेखन के लिए भी और जागरूकता के लिए भी !

प्रश्न 9. आज जो वेस्टर्न कल्चर आ चुका है, उसी से हमारी युवा पीढ़ी भारतीयता से दूर हुई है, आप क्या कहना चाहेंगे इस विषय में मैडम ?

बच्चे बाहर जाना चाहते हैं, कहते हैं क्या रखा है इंडिया में ? तो मैं कहती हूँ कि विदेश जाते हो तो वहाँ की संस्कृति अच्छी या भारतीय ! तो वो कहते हैं भारत की ! मैं बोलती हूँ उनको, फिर भी भारत को क्यों छोड़ना चाहते हो ?

फाइनल ईयर में एक कविता है अज्ञेय जी की ग्रामीण जीवन का वर्णन है उसमें ! बच्चों पर आज नगरीय जीवन का बहुत प्रभाव है ! हम बच्चों से पूछते हैं आपको गांव में अच्छा लगता है कि शहर में ? दरअसल मानवीय मूल्य तो गांव में ही हैं !

हमारा देश तो ऑटोमेटिकली गुलाम बनने लगा है, बस अपने खान – पान से, रहन – सहन से ! हम ब्रांड देखते हैं !" monte carlo, woodland क्या ये भारत की ब्रांड है ?

अपने देश की चीज को देशी बोलते हैं, अपने देश की चीज को तो देशी ही बोला जायेगा ! वेस्टर्न culcture आ चुका है ! लेकिन अगर deeply समझाया जायेगा तो

बच्चे आगे जरूर आते हैं फिर वो हमसे पूछने लगते हैं कि हम परिवर्तन कैसे लाएं ?

प्रश्न 10. महिला की हर उपलब्धि के पीछे बहुत संघर्ष होते हैं ये बात कितनी सही है मैडम ?

महिलाएं घर औऱ बाहर दोनों की जिम्मेदारी निभा रही होती हैं, इतना होने के बावज़ूद भी उन पर अत्याचार किये जाते हैं ! घर दो हैं उनके लेकिन उनके लिए रहस्य है कि कौनसा घर उनका है ?

मेरे पिताजी ने भाई औऱ मुझे बराबर रखा ! गांव के लोग उन्हें कहते थे, हंसती है ,लड़को से बात करती है क्यों पढ़ा रहा है फिर भी उन्होंने मुझे पढ़ने दिया !

प्रश्न 11. समस्याओं को लेकर व्यक्ति का कैसा नजरिया होना चाहिए ?

मैं बहुत हँस मुख हूँ कितनी भी tension में हूँ, खुद को, उस बात से कैसे भी separate कर लेती हूँ, फ्रेंड्स से मिलकर, घूम कर, !

गरीब लोगों से मिलती हूँ, घास काटते रहते हैं, उनका दुःख हमसे बड़ा होता है फिर भी वे हमसे ज्यादा खुश होते हैं ! उनकी समस्याओं को सुनकर अपनी समस्या छोटी लगने लगती है ! ज़ब मुझे tension होती है उनको देख लेती हूँ ! एक – एक दिन का काम करते हैं मैडम वे फिर भी हमसे ज्यादा खुश रह पाते हैं !

मैं बच्चों से बोलती हूँ इनसे मिले हो कभी आप ? बात की है आपने इनसे ? ये देखो बिल्डिंग बन रही है, एक बार उनसे बात करना फिर आपको जिंदगी का अच्छी तरह पता चलेगा !

मेरे को tension होती है तो मैं इनको देखती हूँ, उनके चेहरे पर कितनी ख़ुशी होती है !

प्रश्न 12. बच्चों को जागरूक करने की दिशा में आपका कैसा प्रयास रहता है ?

बच्चे कविताएं लिखते हैं, उन्हें जागरूक करो तो लिख लेंगें अच्छा !

मैं कविताओं की व्याख्या उन्हीं को करने के लिए देती हूँ, उनकी सुन लेती हूँ फिर कमियों को मैं पूरा करती हूँ ! छोटी छोटी कविताओं में बड़े बड़े रहस्य छिपे होते हैं, जो समाज की समस्याओं के बारे में हैं !

प्रश्न 13. यथार्थ में अपने विचारों को उतारना ही असली योगदान होता है समाज को, क्या कहना है आपका ?

मैं प्रैक्टिकल में ही विश्वास करती हूँ मैडम !, मैं बच्चों को भी यही समझाती हूँ कबीर दास जी अब नहीं है लेकिन क्यों पदते हैं हम इनको ! किस कारण से प्रासंगिक हैं ये, क्योंकि जो समाजऔऱ मानवीय मूल्य उस समय थे उन से आप कैसे परिचित होंगे ! उनसे परिचित नहीं होंगे तो आप जियोगे कैसे ? घर में दादा दादी, पापा हैं आपके ! आपकी कुछ परम्परायें हैं उनको लेकर अभी तक चल रहें हो ! समस्याएं तब भी थी अब भी हैं पहले हम सीधे रूप से अंग्रेजो के गुलाम थे अब हमारी संस्कृति अपने ही देश में लुप्त होने लग रही हैं ! विदेशों में हमारी संस्कृति को बहुत मान रहें हैं लोग !"हम अपनी संस्कृति को खुद ही खत्म कर रहें हैं !

प्रश्न 14. आज युवा पीढ़ी को आप क्या सन्देश देना चाहेंगी मैडम ?

मैं प्रैक्टिकल में विश्वास करती हूँ, भाषण देने में नहीं, जो भी सीखना चाहती हूँ मैडम मैं खुद पहले उसी पर अमल करती हूँ !

प्रश्न 15. लेखन में भविष्य की क्या संभावना दिखाई देती है आपको ?

आजकल हिंदी का देश ही नहीं विदेशों में भी बहुत महत्व है ! आपके लिखने में प्रभाव हो तो किताब बाजार में जरूर बिकती है ! हम भी मैडम गाइड लिखने की कोशिश कर रहें है, अपने सिलेबस की, अच्छी लिखी है ! जरूर चलेगी !

मैं यही कहना चाहूंगी कि खुद प्रैक्टिकल करके किसी के जीवन के लिए प्रेरणा बनो !

जी बहुत बहुत धन्यवाद मैडम, आपबे बहुत सरल शब्दों से बहुत गहरी बातें हमें बताई हम उम्मीद करते है कि आपका जीवन की ये सब बातें जानकर पाठकों को प्रेरणा अवश्य मिलेगी !

- शिवा स्वयं

संपादक

आपकी सफलता

साक्षात्कार

पुलकित शर्मा (आर. जे. एस.-2021)

आज हम आपकी मुलाक़ात करवाने जा रहे हैं – RJS - पुलकित शर्मा से !

पुलकित जी ने RJS के exam को clear किया है ! Judiciary के इस exam को पास करने के लिए students को तीन चरणों में परीक्षाओं को पास करना होता है ! Pre, mains और interview

इन सब चरणों से clear होने के लिए एक रणनीति बनानी होती है !

आज हम पुलकित सर से जानते हैं कि उन्होंने इस सफलता को प्राप्त करने के लिए कैसी रण नीति बनाई ?

सबसे पहले तो सर, हम नई गूँज पत्रिका की ओर से आपका हार्दिक अभिनन्दन करते हैं और आपको इस सफलता के लिए बहुत बहुत बधाई देते हैं ! कोई भी सफलता एक साथ नहीं मिल जाती, उसके पीछे अथक और निरंतर प्रयास जरूर छिपे रहते है ! ये बिल्कुल सागर में से हीरे चुन कर लाने जैसा है ! हमें बहुत ख़ुशी है कि आपका यह अनुभव, आप उन सभी RJS Aspirants s के साथ बाँट रहें है! इससे इन्हें निश्चित ही प्रेरणा तो मिलेगी ही साथ ही ये सभी Aspirants अपने लिए exam को पास करने की एक रण नीति बना पाएंगे !

तो सर,

प्रश्न 1 सर, सबसे पहले हम सभी जानना चाहेंगे कि आप अपने जीवन, परिवार व शिक्षा के विषय में बताएं !

उत्तर 1 मेरा नाम पुलकित शर्मा है ! मैं मूलतः भरतपुर का रहने वाला हूँ और पिछले 14-18 सालों से जयपुर में निवास कर रहा हूँ !मैंने राजस्थान यूनिवर्सिटी से LL. M. किया है !

मैंने एल एल बी होते ही आर जे एस की तैयारी शुरू कर दी थी ! और एल एल एम भी करता रहा ! फिर मेरा 3rd attempt में आर जे एस में चयन हो गया !

प्रश्न 2 सर, आपका मीडियम क्या है?

उत्तर मेरा मीडियम throughout ही English रहा !

प्रश्न 3 आपका वर्तमान में किस पद पर चयन हुआ है ?

उत्तर - हाल में मेरा पद आर जे एस civil judge and magistrate में है और जोधपुर में under training में हूँ !

प्रश्न 4 सर, आपकी सफलता के रहस्य सभी जानना चाहेंगे

उत्तर - निरंतर परिश्रम, दृढ़ निश्चय लगन और आत्म विश्वास और हार न मानना ही व्यक्ति को शिखर तक ले जाता है !

प्रश्न 5. आपका role model कौन हैं ?

उत्तर - मेरा role मॉडल मेरे दादा जी हैं, जो खुद भी आर ए एस रिटायर्ड ऑफिसर थे ! उन्होंने मुझे जीवन के मूल मन्त्र भी सिखाये ! यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि जो कुछ भी मैं आज हूँ उसमें उनका हमेशा आशीर्वाद रहा है !

प्रश्न 6. आप Message to students क्या देना चाहेंगे ?

उत्तर - मैं आर जे एस aspirants को यहीं कहना चाहूंगा कि ज़ब आपने दृढ़ निश्चय कर लिया है तो आपको आपको आपके लक्ष्य तक पहुंचने में कोई नहीं रोक सकता !

प्रश्न 7 विद्यार्थियों को तैयारी कैसे करें, यह जानने की बहुत उत्सुकता रहतीं है, आप इसके बारे में उन्हें क्या कहना चाहेंगे ?

उत्तर - तैयारी start करने से पहले हमें जिस exam में आप appear हो रहें हैँ, उसके सिलेबस से go through हो जाएँ ! उससे सम्बंधित study material को पढ़े और previous years के question papers की practice करें ! Mock test दें ! अपना स्वयं का एक schedule तैयार करें !

प्रश्न 8.प्रथम प्रयास में सफलता न मिलने पर निराशा से बाहर कैसे निकलें ?

उत्तर - हाँ, ऐसा हो सकता है कि पहले प्रयास में चयन न हो तो हताश न हों क्योंकि competitive exam में कोई फेल या पास नहीं होता है !समय लग सकता है, यदि आप निरंतर पढ़ाई करते रहेंगे तो सफलता अवश्य मिलेगी !

प्रश्न 9. सर, परीक्षा की तैयारी पर आपकी रणनीति क्या रही ?

उत्तर - रण नीति का प्रश्न है तो प्रत्येक की अपनी स्वयं की होती है और जहाँ तक मुझसे सम्बंधित है तो मैं कभी भी पढ़ाई में गैप नहीं आने देता था !, test papers प्रैक्टिस करता था और 10-12 घंटे रोज़ पढ़ता था !

प्रश्न 10. सर, आपने Pre, mains, interview – तीनों की तैयारी कैसे करें

उत्तर - pre, mains के लिए same strategy रहनी चाहिए जैसे law

Mains में हिंदी और इंग्लिश में essay प्रैक्टिस करें !अलग से और इंटरव्यू के वक़्त g.k. भी पढ़े !

प्रश्न 11. क्या वकालत का ज्ञान भी जरूरी है

उत्तर - advocacy का experience as such जरूरी नहीं है !क्योंकि आर जे एस की एक साल की ट्रेनिंग होती है ! तो उससे आप बहुत कुछ सीखते हैं और यदि कर रखी है तो आपकी law की knowledge enhance ही होगी !

प्रश्न 12. सफलता के लिए self study जरूरी है या coaching या दोनों और क्यों ?

उत्तर - मेरे विचार से दोनों ! Self study और coaching both are important क्योंकि कोचिंग आपकी मदद करती है कि आपको क्या पढ़ना है और क्या नहीं !

प्रश्न 13. राजस्थान में law का weightage कितना होता है ! Eng वाले हिन्दी को कैसे औऱ हिन्दी वाले English को कैसे तैयार करें इस बारे में मार्गदर्शन करें !

उत्तर - law का weightage 70 परसेंट होता है औऱ language का around 30 percent होता है ! Pre exam में language में grammar आती है औऱ mains में essay writing तो उसकी प्रैक्टिस अच्छे marks के लिए आवश्यक है !

प्रश्न 14. pre, mains के बाद इंटरव्यू का जो डर रहता है वो बरकरार रहता है उसके लिए student क्या करें ?

उत्तर - . देखिए थोड़ा डर होना अच्छी बात है परन्तु इंटरव्यू के लिए ज्यादा डरने की जरूरत नहीं है क्योंकि इंटरव्यू एक फॉर्मल discussion जैसे होता है !

प्रश्न 15. आपने RJS कौनसे attempt में clear किया ?

क्या आपने केवल RJS पर ही फोकस रखा या कोई अन्य कार्यों में भी आपने अपना समय दिया !

उत्तर - मैं 3rd attempt में select हुआ था ! औऱ मैंने दूसरा कोई exam नहीं दिया परन्तु इसका मतलब यह नहीं है कि दूसरे एग्जाम अच्छे नहीं, उनका भी उतना ही महत्व है !

प्रश्न 16. सर, जो student 2 या 3 attempt पर भी रह जाते हैँ, उन्हें आप क्या कहना चाहेंगे ?

उत्तर- Attempt से ज्यादा कुछ नहीं होता ! आपको यदि आपका लक्ष्य हासिल हो जाता है तो वही आपका best attempt है !

प्रश्न 17 सर, विद्यार्थी coaching कर लेते हैँ, इसमें test series का क्या role है ?

उत्तर - Test series play an important role. क्योंकि इससे हमें पता लगता रहता है कि हम कितने पानी में हैँ !

प्रश्न 18. वर्तमान में जो छात्र RJS की तैयारी कर रहें हैँ, उनके लिए आप क्या कहना चाहेंगे ?

उत्तर - Regular पढ़िए, अपने सीनियर्स के touch में रहिये ! अपने teachers से doubt clear करते रहिये औऱ अपने आप पर विश्वास रखिये !

प्रश्न 19. क्या आपने नोट्स बना कर तैयारी की ?

उत्तर - बिल्कुल, मैं खुद के नोट्स बनाता था !

Signatures

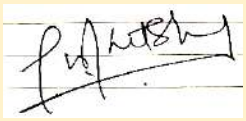

धन्यवाद सर, आपने आर जे एस के aspirants को ही नहीं हम सभी को अपनी सफलता की रण नीति पर बात करके बहुत उत्साह दिया है !

दरअसल रोशनी तो चिराग से ही होती है, आग से नहीं औऱ वो चिराग अपने भीतर जलाये ऱखना, उसकी लौ को न बुझने देना, ना कम होने देना, जो हमें हमेशा अपने लक्ष्य की याद दिलाता है यही दृष्टिकोण हमें इस योग्य बना देता है कि हम रोशनी दिखा सकें, रोशनी बन सकें ! आप का मार्गदर्शन उसी रोशनी की तरह है आपका प्रत्येक शब्द प्रेरणादायक है !

एक बार फिर से मैं नई गूँज के समस्त सदस्यों की ओर से आपका धन्यवाद व्यक्त करती हूँ !

धन्यवाद सर !

शिवा स्वयं

सम्पादक

WWW.NAYI GOONJ. COM

Whatsapp no.91-9785837924

जनवरी 2022

Volume 1

MAGAZINE DESIGNING BY RAHUL DEEWAN

Email - goonjnayi@gmail.com